साप्ताहिक
शांति मिशन
नई दिल्ली

वर्ष-29 अंक- 07 13-19 फरवरी 2022 पृष्ठ 12

अन्दर पढ़िए

जब अटल जी गए 'फैज़' से मिलने पृष्ठ-6

मायावंती का इतिहास उन्हें जनतंत्र का जादू बनाता है पृष्ठ-7

भारत के गणतंत्र के 72 वर्ष

क्या यही है गांधी, सुभाष और नेहरु की कल्पना का हिन्दुस्तान

भारत में लोकतंत्र के 72 वर्ष पूरे हो चुके हैं मगर प्रश्न यह है कि आज देश के जो हालात हैं क्या देश की स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करने वाले महात्मा गांधी पंडित जवाहर लाल नेहरु और सुभाष चन्द्र बोस ने ऐसी ही आज़ादी और लोकतंत्र की कल्पना की थी।

प्रत्येक वर्ष भारत देश में जनवरी का तीसरा सप्ताह अपनी एक विशेषता रखता है। यह सप्ताह जहां एक ओर हमें गणतंत्र का पर्व मनाने का गर्व प्रदान करता है वही देश के महान स्वतंत्रता संग्राम के ध्वजावाहक सुभाष चन्द्र बोस की स्मृतियां के रूप में उनकी जन्मतिथि मनाने का अवसर देता है। देशभर में नेताजी सुभाष चन्द्र बोस की जन्मतिथि, गांधी जी की पूण्य स्मृति और गणतंत्र दिवस समारोह तथा अपनी सैनिक क्षमता पर गर्व करने का भी अवसर प्रदान करता है। इसी के साथ बापू के उपदेशों या उनके सिद्धांतों का उल्लेख करने और उन पर अपनी राय ज़ाहिर करने का मौक़ा भी मिल जाता है। इस बात पर बहुत कम लोगों का ध्यान जाता है कि इन दोनों महापुरुषों ने हिन्दुस्तान के स्वतंत्रत होने के बाद उसका संचालन किस प्रकार हो, इसकी क्या रूप रेखा संजोई थी?

महात्मा गांधी या सुभाष चन्द्र बोस में से कौन सही या ग़लत कौन था इस पृष्ठभूमि में यह आंकलन करना आवश्यक हो जाता है और यदि कोई अन्य विकलप अपनाया जाता तो क्या देश का वही स्वरूप होता जो आज है? इन दोनों के संबंधों, सोच और कार्य प्रणाली पर विचार करते हुए तीसरे महानायक पंडित नेहरु का ध्यान आना स्वाभाविक है। कह सकते हैं कि ये भारत की त्रिमूर्ति थे और यदि सरदार पटेल को इसमें मिला दिया जाए तो सोने पे सुहागा। ये चारों नायक देशभक्ति, कर्तव्य परायणता और समर्पण की अदभूत शक्ति धारण किए हुए थे और इसी कारण जनता उन पर भरोसा करते हुए अपनी जान तक न्यौछावर करने के लिए तैयार रहती थी।

आज क्योंकि इंटरनेट और गूगल की कृपा से इतिहास की प्रकट और गोपनीय सामग्री उपलब्ध है इसलिए बहुत सी घटनाओं की सत्यता की पुष्टि कर लेने के बाद उन पर विचार और मंथन वर्तमान स्थिति को सामने रख कर किया जा सकता है। इससे यह निष्कर्ष निकालने में सुविधा है कि कौन सा मत या विचारधारा अधिक उपयुक्त थी।

सुभाष चन्द्र बोस जी के उस भाषण को सामने रखते हैं जो उन्होंने कांग्रेस के अध्यक्ष के रूप में पहला भाषण दिया था "कि स्वतंत्र भारत की प्रथम प्राथमिकता ग़रीबी मिटाने, बेरोज़गारी दूर करने और देश को शिक्षित करने की है। इसके लिए उन्होंने एक विस्तृत योजना बनाकर काम करने की राह दिखाई। एक समिति बनाई जिसका अध्यक्ष पंडित नेहरू को बनाया गया ताकि वे स्पष्ट रूप से दिशा निर्धारण कर सकें। आज के योजना की यह नींव थी। उनका मानना था कि देश में वर्गहीन समाज का निर्माण समाजवाद को आधार बनाकर हो। इसकी पूर्ति के लिए औद्योगिकीकरण का विस्तार हो और कृषि विकास दूसरे नंबर पर हो। वैज्ञानिक दृष्टिकोण, आधुनिक मशीनरी का आयात था उसका अपने हिसाब से इस्तेमाल करने की दृष्टि हो। शिक्षा सबके लिए एक समान हो और उस पर सबका अधिकार हो तथा यह सबके लिए एक जैसी और आसानी से सुलभ हो। उनका मानना था कि भेदभाव रहित शिक्षा से ही समाज से बेरोज़गारी और ग़रीबी को ख़त्म किया जा सकता है। उन्होंने अपने विशाल अनुभव और अनेक देशों में इस्तेमाल की गई व्यवस्थाओं का अध्ययन करने के बाद ही यह बातें कहीं थीं। यहां यह ध्यान दिलाना ज़रूरी है कि सुभाष चन्द्र बोस के पास नगर निगम के प्रशासक के रूप में व्यावहारिक अनुभव था और वे जनता की समस्याओं को समझने और उनके समाधान निकालने के लिए प्रसिद्ध थे।

अब चर्चा करेंगे विश्व में सबसे ज़्यादा प्रसिद्ध और सम्मानीय और हमारे देश की शान महात्मा गांधी जी की। गांधी जी वर्गहीन समाज के स्थान पर पिछड़े, दलित, हरिजन और अनेक जातियों में बंटे समाज के विकास के लिए एक अधिकारों को सुरक्षित रखने की बात करते हैं। इसके लिए वे उन्हें मिलाकर एक विशाल समाज तैयार करने के स्थान पर अलग अलग रखने को ही उनकी उन्नति का आधार बनाते हैं।

आज हमारा देश वर्ग, संघर्ष, जातिवाद और अल्पसंख्यक समुदाय के उत्पीड़न और इसके साथ ही अपने स्वार्थों के कारण उनके तुष्टिकरण के जिस दौर से गुज़र रहा है, उसकी नींव आज़ादी के तुरंत बाद पड़ गई थी। यदि हम बोस की वर्गहीन समाज की नीति पर चलते तो क्या बेहतर नहीं होता? देश को कृषि प्रधान बनाने के प्रयास गांधी जी की देन हैं और उसमें भी परंपरागत साधना जैसे कि हल बैल से खेती करने को ही प्राथमिकता देने और वैज्ञानिक तरीक़ों को न अपनाने का परिणाम क्या आज तक हम नहीं भुगत रहे हैं?

महात्मा गाँधी की मशीनों के इस्तेमाल ओर यहां तक कि रेल, अस्पताल की ज़रूरत नहीं समझते थे। अंग्रेज़ी दवाईयों का इस्तेमाल न करने पर ज़ोर देते थे और यहां तक कि परिवार नियोजन के लिए गर्भ निरोधक सामग्री के इस्तेमाल को बुरा समझते थे। इसके लिए आत्मसंयम रखने को प्रोत्साहित करते थे। उनके लिए नवीन टेक्नोलॉजी पर आधारित औद्योगिक भारत के स्थान पर ग्रामीण और कुटीर उद्योग का विकास प्राथमिकता थी। गांधी जी आध्यात्मिक राजनीतिज्ञ थे जबकि सुभाष आधुनिक राजनेता थे। नेहरू भी चाहते थे कि हम स्वदेशी संसाधनों के बल पर ही विकास करें जबकि बोस विदेशों से अपनी आवश्यकतानुसार सभी चीज़ों का आयात करने के हिमायती थे। नेहरू तथा आयात और विदेशी पूंजी निवेश पर कड़े नियम बनाने से हम विदेशी तकनीक और पूंजी निवेश से वंचित हो गए। इस नीति को जब पूरी तरह से बदल दिया गया तब ही देश आत्मनिर्भर होना आरंभ हुआ, क्या यह गंभीरता से सोचने का विषय नहीं है?

नेहरू और बोस दोनों गांधी जी को अपने पुत्रों की भांति प्रिय थे लेकिन जब उत्तराधिकारी की बात आई तो उन्होंने भारतीय सामंती व्यवस्था के अनुसार बड़े पुत्र को चुना, यदि योग्यता का आधार होता तो सुभाष हर प्रकार से अधिक क़ाबिल थे और लोकतांत्रिक व्यवस्था में उनकी दावेदारी प्रबल थी। सुभाष चन्द्र बोस आज़ादी हासिल करने के लिए किसी भी साधन का इस्तेमाल करने और किसी की भी सहायता अपनी शर्तों पर लेने के लिए कोई भी हद पार कर सकते थे। इसके लिए वे विदेशी धरती पर भारत की आज़ादी की घोषणा कर सकते थे, अंग्रेज़ों की नाक में दम कर सकते थे। आज़ाद हिन्द फौज की स्थापना, दिल्ली चलो का नारा और जय हिन्द का उद्घोष उनकी राजनीतिक सूझबूझ का परिचायक है। ❑❑

ध्रुवीकरण की सबसे ज़्यादा मार झेलता राज्य 'उत्तर प्रदेश'

इन दिनों पूरे भारत में उत्तर प्रदेश सहित पांच राज्यों की विधान सभाओं के चुनावों की चर्चा ज़ोरों है। इन पांच राज्यों में यूं सभी राज्यों में ध्रुवीकरण का माहौल बनाने की पार्टियां पूरी कोशिश में हैं, परंतु इस ध्रुवीकरण की मार सबसे ज़्यादा अगर कोई राज्य झेल रहा है तो वह है उत्तर प्रदेश! संभवत: उत्तर प्रदेश भारत का एक ऐसा राज्य है जहां चुनावी माहौल में ध्रुवीकरण सबसे ज़्यादा होता है। ऐसे मुद्दे हवा में उछाले जा रहे थे, जिन्हें सिर्फ अनुचित कहा जा सकता है। ऐसा ही एक मुद्दा धार्मिक जातीय आधार पर समाज का ध्रुवीकरण है। इधर कोरोना का संकट गहरा रहा, उधर उत्तर प्रदेश समेत पांच राज्यों की विधानसभाओं के चुनावों की सरगर्मी तेज़ हो चुकी है।

चुनावों की तारीख़ों के ऐलान होने के बाद से चुनाव प्रचार में तेज़ी आना स्वाभाविक है। ऐसा नहीं है कि इससे पहले चुनाव प्रचार का काम नहीं हो रहा था, सभी दस इस संदर्भ में पूरी कोशिश में लगे थे। यह आसानी से देखा जा सकता था कि उसके पास जितने साधन थे, वह उसी के अनुसार प्रचार कार्य में लगा था। इस प्रचार-कार्य पर उंगली तो उठाई जा सकती है, पर यह कहना सही नहीं होगा कि सब कुछ ग़लत हो रहा था लेकिन यह भी सही है कि जिन मुद्दों पर जोर दिया जाना चाहिए था वे कहीं हाशिये पर थे और ऐसे मुद्दे हवा में उछाले जा रहे थे, जिन्हें सिर्फ अनुचित कहा जा सकता है। ऐसा ही एक धार्मिक और जातीय आधार पर समाज का बंटवारा है। देश का प्रबुद्ध नागरिक पहले भी इस ध्रुवीकरण की इस प्रवृत्ति से चिंतित था, आज भी है।

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री का एक बयान इसका ताज़ा उदाहरण है। उन्होंने एक चुनावी सभा में राज्य में चुनावी लड़ाई को अस्सी प्रतिशत बनाम बीस प्रतिशत के बीच मुक़ाबले का नाम दिया है हालांकि, उन्होंने यह कहकर अपने मंतव्य पर एक पर्दा डालने का प्रयास भी किया कि वह उनके विरोधी बीस प्रतिशत में वे लोग हैं जिनका रिश्ता आपराधिक गतिविधियों से है, पर यह बात समझने के लिए समझने के लिए किसी उच्च स्तरीय गणित की आवश्यकता नहीं है कि देश में और उत्तर प्रदेश में भी, धार्मिक आधार पर जनसंख्या का बंटवारा अस्सी प्रतिशत और बीस प्रतिशत ही है। मुख्यमंत्री

बाक़ी पेज 06 पर

तालिबान की रहमदिली का 'चेहरा' बनी गर्भवती पत्रकार शार्लट बेलस

रंगनाथ सिंह

तस्वीर में हिजाब में तालिबान लड़ाकों के बीच दिख रही महिला शार्लट बेलस हैं। वो क़तर के चैनल अल जज़ीरा में काबुल संवादाता थीं। उन्होंने 29 जनवरी को न्यूजीलैंड के एक अख़बार में ब्लॉग लिखकर बताया कि वो गर्भवती हैं और न्यूजीलैंड सरकार ने उनका देश वापसी का आवेदन ठुकरा दिया है। उन्होंने यह भी बताया कि तालिबान ने उनकी स्थिति समझते हुए उन्हें 'शरण' दी है। दुनियाभर की मीडिया ने यह ख़बर चलायी कि किस तरह न्यूजीलैंड की गर्भवती पत्रकार को तालिबान ने शरण दी।

जर्मन संस्थान डायचे वैले ने तो हेडिंग दी कि 'न्यूजीलैंड की गर्भवती महिला पत्रकार अफ़ग़ानिस्तान जाने को हुई मजबूर' 29 जनवरी के बाद से यह ख़बर दुनियाभर के अख़बारों में छप चुकी है। आइए अब थोड़ा 29 जनवरी से पीछे चलते हैं। शार्लट 29 जनवरी से पीछे चलते हैं। शार्लट ने 01 दिसम्बर को टवीट किया कि अल जज़ीरा में शानदार पांच वर्ष बिताने के बाद उन्होंने इस्तीफा दे दिया है। उसी दिन उन्होंने यह भी बताया कि अब वो कुछ विशेष परियोजनाओं पर काम शुरू करेंगी। 13 जनवरी को शार्लट ने टवीट किया कि वो काबुल पहुंच चुकी हैं।

एक शानदार अंग्रेजी बोलने वाले तालिबान ने मुस्कराते हुए उन्हें सड़क पर सुरक्षा जांच के लिए रोका और बताया कि वो जीडीआई से है। शार्लट ने टवीट में स्पष्ट किया कि ठीक वैसे ही हुआ जैसे अमेरिका ने सीआईए है। शार्लट ने यह भी साफ किया कि उस तालिबान ने इतनी शानदार अंग्रेजी बगराम जेल में (अमेरिकी नियंत्रण के दौरान) सीखी! शार्लट ने उस तालिबान को बताया कि वो पत्रकार हैं तो वो मुस्कराता हुआ उन्हें शुभकामना देता हुआ अपनी टीम के साथ चला गया। न्यूजीलैंड सरकार के अनुसार 24 जनवरी को शार्लट ने न्यूजीलैंड वापस जाने के लिए मेडिकल इमरजेंसी श्रेणी में आवेदन भेजा। आवेदन में उन्होंने यात्रा की तारीख़ 27 फरवरी बतायी।

उन्हें जवाब मिला कि इस श्रेणी में

शार्लट के अनुसार बेल्जियम में कानूनन करीब 15 मार्च तक रुक सकती थीं और उसके आगे रुकने के लिए उन्होंने या उनके बेल्यिजम नागरिक पार्टनर प्रशासन से कोई दरख्वास्त की थी या नहीं। यह भी साफ नहीं है कि उन्होंने बेल्जियम में रहकर आवेदन भेजने के बजाय काबुल लौटकर 12 दिन बाद आवेदन भेजने का क्यों फैसला किया।

आवेदन भेजने के लिए यात्रा की तारीख़ आवेदन के 14 दिन के अंदर की होनी चाहिए और उसके साथ इस बात का प्रमाण पत्र लगाना होगा कि आपको मेडिकल-एमरजेंसी है। शार्लेट को यह भी बताया गया कि वो यात्रा की तारीख़ आगे करके दोबारा आवेदन कर सकती है या यात्रा की तारीख़ के हिसाब से बाद में आवेदन भेज सकती हैं। 29 जनवरी को शार्लट ने न्यूजीलैंड के एक अख़बार में लेख लिखकर बताया कि वो लड़की की मां बनने वाली है और न्यूजीलैंड प्रशासन ने उनके आपातकाल आगमन का आवेदन ठुकरा दिया है

शार्लट ने भी बताया कि उन्होंने अलजज़ीरा से नवम्बर में इस्तीफा दिया था। क़तर में बिना शादी मां बनना अपराध है इसलिए वो और और उनके पार्टनर जिम जो उस समय काबुल में थे, ने यह बात गोपनीय रखी। दोनों जिस के मूल वतन बेल्जियम लौट गये। शार्लट ने बताया कि बेल्जियम में विदेशीा नागरिक शेंजेन वीजा पर छह माह के वक्फे में तीन माह ही रह सकते हैं और जनवरी के अंत तक उनका 'आधा समय' (डेढ़ माह) पूरा हो जाता। शार्लट के अनुसार उनका बच्चा मई में पैदा होने वाला है। उन्होंने न्यूज़ीलैंड जाने के लिए प्रयास किया लेकिन कोविड प्रतिबंध की वजह से नहीं जा सकीं। उन्होंने तालिबान के अधिकारी से बात करे बताया कि वो बिना शादी के मां बनने वाली है तो उसने कहा कोई बात नहीं, काबुल आ जाएं लोग पूछे तो कह दीजिएगा कि आप शादीशुदा हैं, कहीं ज़्यादा दिक्क़त हो तो हमें बताइएगा।

शार्लट और जिम बेल्जियम कब गये यह साफ नहीं है लेकिन शार्लट ने 13 जनवरी को टवीट किया कि वो काबुल वापस आ चुकी हैं। 29 जनवरी को लिखे ब्लॉग में शार्लट ने बताया कि उन्हें न्यूजीलैंड प्रशासन ने 24 जनवरी को जवाब मिला कि उनका आवेदन स्वीकार नहीं हुआ है

बाक़ी पेज 11 पर

प्रगति मैदान सुरंग सड़क सुविधाओं से होगी लैस, सुरक्षा के होंगे पुख़्ता इंतज़ाम

प्रगति मैदान सुरंग सड़क व्यवस्थाओं की वजह से विशेष होगी। इसमें स्मार्ट लाइटिंग सिस्टम लगाया जा रहा है। सुरंग के अंदर के वाहनों का प्रदूषण दूर करने के लिए जर्मनी निर्मित एग्जास्ट फैन लगाए जा रहे हैं, जो अंदर से गुज़रने वाले वाहनों की प्रदूषित हवा को बाहर निकालेंगे। सुरंग के अंदर निगरानी के लिए सीसीटीवी कैमरे लगे होंगे। वाहन ख़राब होने पर उसे बाहर ले जाने की व्यवस्था होगी। आग से बचाव के लिए बनाए गए भूमिगत टैंकों में हर समय चार लाख लीटर पानी रहेगा।

सुरंग के काम को पूरा करने के लिए निर्माण सामग्री संबंधी समस्या के कारण फरवरी के अंत तक इसका काम पूरा होगा। सवा किलोमीटर लंबी इस सुरंग में एक भी होल नहीं है जहां से बाहर की रौशनी अंदर जा सके या अंदर से गुज़रने वाले वाहनों की प्रदूषित हवा बाहर निकल सके। जिस समय सुरंग बनाने की योजना बनी थी तो लोक निर्माण विभाग ने प्रदूषित वायु के लिए कुछ स्थानों पर बड़े होल की व्यवस्था बनाने का प्रस्ताव रखा था, लेकिन इस पर सहमति नहीं बन सकी थी। योजना में बदलाव कर सुरंग में 28 एग्जास्ट फैन लगाए जा रहे हैं।

सुरंग के अंदर रोशनी के लिए स्मार्ट लाईटिंग सिस्टम लगाया जा रहा है। इसके तहत सुरंग के अंदर प्रवेश करने और बाहर निकलने वाले भागों पर दिन के समय अधिक रोशनी रहेगी। जितना अंदर बढ़ेंगे तो रोशनी कुछ कम होती जाएगी और सामान्य दिन जैसा माहौल रहेगा। रौशनी इतनी ही रहेगी कि आंखों को परेशानी नहीं हो। रात के समय सुरंग में स्ट्रीट लाइटों वाली रोशनी रहेगी। 128 सीसीटीवी कैमरों से होगी निगरानी सुरंग के अंदर की सुरक्षा और निगरानी 128 सीसीटीवी कैमरों से होगी। इसके रिंग रोड और पुराना क़िला दोनों भाग पर दो कंट्रोल रूम बनाए जा रहे हैं और इनके पास दो भूमिगत टैंक बनाए गए हैं। जिनमें हर समय चार लाख लीटर पानी उपलब्ध रहेगा, जो फायर फाइटिंग सिस्टम के माध्यम से कुछ समय के अंदर ही आग वाले स्थान पर पहुंच सकेगा।

सुरंग के लिए हर समय एक क्रेन उपलब्ध रहेगी इसके अलावा सुरंग में दोनों ओर कर्मचारी तैनात रहेंगे। एक हेल्पलाइन नंबर जारी किया जाएगा जिससे सुरंग के अंदर से कोई भी व्यक्ति कमांड रूम में बात कर सकेगा। अगले पांच वर्ष तक यह पूरी व्यवस्था निर्माणकर्ता कंपनी लार्सन एंड टूब्रो ही देखेगी। सड़क बनाने का कुछ काम बचा है। हरियाणा से बिटुमिनस मिक्स सामग्री पर्याप्त न आ पाने और रात के समय तापमान कम हो जाने के कारण यह कार्य अभी पूरा नहीं हो सका है। मार्च से वाहन चालक हर हाल में इसका लाभ ले सकेंगे। इसका शुभारंभ प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी से कराए जाने की कोशिश की जा रही है।

यह परियोजना प्रगति मैदान पुनर्विकास योजना के तहत अस्तित्व में आई है। इसके पूरा होने से आइटीओ इलाके में आम से जूझ रहे लोगों को राहत मिलेगी। इंडिया गेट से रिंग रोड पर आने जाने वाले वाहन चालक इस सुरंग सड़क का उपयोग कर सकेंगे।

इसके शुरू हो जाने पर इंडिया गेट, अशोक रोड और मंडी हाउस की ओर से यमुनापार आने जाने के लिए लोग इसका उपयोग कर सकेंगे। इससे वाहन चालकों को 15 से 20 मिनट समय की बचत होगी। तमाम वाहन चालक आइटीओ से नहीं गुज़रेंगे। ❑❑

अकेले कार चलाते वक़्त मास्क लगाना बेतुका : कोर्ट

दिल्ली उच्च न्यायालय ने कोविड-19 महामारी के मद्देनज़र अकेले कार चलाते समय मास्क पहने रहना अनिवार्य करने संबंधी दिल्ली सरकार के आदेश को 'बेतुका' करार दिया है और कहा कि यह फैसला अब तक मौजूद क्यों हैं। पीठ ने कहा, 'यह दिल्ली सरकार का एक आदेश है, आपने इसे वापस क्यों नहीं लिया। यह असल में बेतुका हैं आप अपनी कार में बैठे है और आप मास्क अवश्य लगाएं?' न्यायमूर्ति विपिन सांघी और न्यायमूर्ति जसमीत सिंह की पीठ ने दिल्ली सरकार के वकील से कहा, 'यह आदेश अब भी मौजूद क्यों है? अदालत ने यह टिप्पणी तब की, जब दिल्ली सरकार काा प्रतिनिधित्व कर रहे वकील ने एक ऐसी घटना साझा की, जिसमें मास्क नहीं पहने होने के कारण एक व्यक्ति का चालान किया गया था। दरअसल, वह व्यक्ति अपनी मांग के साथ कार में बैठा हुआ था और वाहन की खिड़की के कांच ऊपर चढ़ा कर कॉफी पी रहा था। सुनवाई के दौरान दिल्ली सरकार की ओर से वरिष्ठ अधिवक्ता राहुल मेहरा ने कहा कि उच्च न्यायालय का सात अप्रैल 2021 का वह फैसला बहुत दुर्भाग्यपूर्ण था, जिसमें निजी कार अकेले चलाते वक़्त नहीं पहने होने को लेकर चालान काटने के दिल्ली सरकार के फैसले में हस्तक्षेप करने से इंकार कर दिया गया था।

उन्होंने कहा, 'कोई व्यक्ति कार की खिड़कियों की कांच ऊपर चढ़ा कर वाहन के अंदर बैठा हुआ है और उसका 2000 रुपए का चालान काट दिया जा रहा है। एकल न्यायाधीश का आदेश बहुत दुर्भाग्यपूर्ण है।' उन्होंने कहा कि दिल्ली आपदा प्रबंधन प्राधिकरण का आदेश जब जारी किया गया था तब स्थिति अलग थी और अब महमारी की मार कम हो गई है। पीठ ने उन्हें जब यह याद दिलाया कि शुरुआती आदेश दिल्ली सरकार ने जारी किया था जिसे फिर एकल न्यायाधीश के समक्ष चुनौती दी गई थी, उस पर मेहरा ने कहा कि चाहे वह दिल्ली सरकार का आदेश हो या केन्द्र का, यह खराब आदेश था और उस पर पुनर्विचार की आवश्यकता है। पीठ ने कहा, 'वह आदेश खराब था तो आप उसे वापस क्यों नहीं ले लेते।' एकल न्यायाधीश का 2021 का आदेश उस वक़्त आया था जब उन्होंने वकीलों की चार याचिकाएं ख़ारिज कर दी थीं।

संपादकीय

शांति मिशन

प्रियंका के राजनीतिक भविष्य के लिए निर्णायक होगा यह चुनाव

प्रत्येक नेता शांत होने के लिए एक महत्वपूर्ण पल का लाभ उठाता है। उत्तर प्रदेश विधानसभा के वर्तमान चुनाव प्रियंका गांधी वाड्रा के राजनीतिक भविष्य के लिए एक निर्णायक पल होंगे। किसी समय एक तुरुप का पत्ता समझी जाने वाली अब उन्हें वर्तमान चुनावों में विशाल चुनौती का सामना करना पड़ रहा है। पार्टी उत्तर प्रदेश में 1989 के बाद से सत्ता में नहीं हैं तथा संगठन लगभग विलुप्त हो चुका है। अत: 49 वर्षीय प्रियंका गांधी के लिए यह एक हिमालयी कार्य होगा जो जनवरी, 2019 में ऊबड़-खाबड़ राजनीति में शामिल हुई थीं।

पार्टी ने अपना मुख्यमंत्री पद का उम्मीदवार घोषित नहीं किया है मगर यदि कांग्रेस किसी चमत्कार से जीत जाती है तो प्रियंका के अलावा और कौन होगा? उन्होंने पिछले दिनों एक रिपोर्टर से यह पूछते हुए स्वीकार किया था कि वह कांग्रेस का चेहरा है कि क्या उन्हें कोई अन्य चेहरा दिखाई देता है। पार्टी का मानना है कि उनका प्रवेश एक गेम चेंजर हो सकता है। कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी आमतौर पर कहती हैं कि प्रियंका, जो दो बच्चों की मां है, को तब राजनीति में आना चाहिए जब वह तैयार हों। जनवरी, 2019 में वह पूर्वी उत्तर प्रदेश की महासचिव प्रभारी बनीं।

एक नेता में 03 गुण होने चाहिएं। पहला है: करिश्मा, दूसरा है भीड़ को आकर्षित करना तथा तीसरा है भीड़ को वोटों में परिवर्तित करना। प्रियंका के पास अपील तथा भीड़ खींचने की क्षमता है। केवल तीसरे अर्थात् भीड़ को वोटों में बदलना अभी हासिल करना बाकी है। यद्यपि वह राजनीति में अनाड़ी नहीं हैं, लगभग 02 दशकों से उन्होंने पृष्ठभूमि में निर्णय लेते हुए राजनीति खेली है। उनकी भूमिका उत्तर प्रदेश में भागीदारी उनके पिता राजीव गांधी के समय तक पीछे जाती है जब वह अमेठी में उनके लिए तथा अपनी मां के निर्वाचन क्षेत्र रायबरेली में प्रचार में उनकी मददर करती थीं। वह अपने भाई राहुल गांधी के निर्वाचन क्षेत्र अमेठी का भी ध्यान रखती थीं हालांकि 2019 के चुनावों में वह हार गए थे।

प्रियंका के राजनीतिक कैरियर के लिए कई '+' तथा '-' हैं। गांधी परिवार का सदस्य होना एक अतिरिक्त लाभ है। उन्होंने पार्टी का प्रभार उस समय संभाला जब कांग्रेस का समर्थन आधार उत्तर प्रदेश तथा देश में अपने निम्नतम स्तर पर हैं। पार्टी उनके भाई राहुल गांधी के मुक़ाबले उन्हें बेहतर मानती हैं तथा लोगों से मिलने जुलने के उनके कौशल, भाषा पर कमान तथा हाज़िर जवाबी की प्रशंसा करती है। बिना किसी आधार के पार्टी 1989 से लड़खड़ा रही है। उच्च जातियां भाजपा की ओर चली गई हैं, पिछड़ी जातियां सपा की ओर तथा दलित बसपा के खेमे में। अल्पसंख्यक मतदाता सपा, बसपा तथा कांग्रेस में बंट गए हैं। प्रियंका से पहले सबसे बड़ी चुनौती पार्टी के सामाजिक आधार को पुन: पाना अथवा एक नया बनाना है। 2017 में पार्टी की मत हिस्सेदारी मुश्किल से 07 प्रतिशत थी।

सबसे बढ़कर विभाजित पक्ष के साथ भाजपा को बढ़त प्राप्त है। पार्टी के 1996 में बसपा के साथ 2017 के विधानसभा चुनाव में समाजवादी पार्टी के साथ गठजोड़ के प्रयोग बुरी तरह से असफल रहे हैं। कांग्रेस ने 2022 के उत्तर प्रदेश के विधानसभा चुनावों में 'एकला चलो' की रणनीति अपनाई है और इस कारण से अलग-थलग पड़ गई है जबकि तृणमूल कांग्रेस तथा राकांपा जैसी अन्य पार्टियों ने सपा के साथ गठबंधन किया है। ऐसा दिखाई देता है कि भाजपा के ख़िलाफ़ कोई भी सत्ताविरोधी लहर यदि है तो सपा-रालोद गठजोड़ के पक्ष में जाएगी। जहां अन्य पार्टियां जाति तथा धर्म के पत्तों पर निर्भर हैं, प्रियंका ने लिंग आधारित कार्ड को चुना है तथा एक विशेष महिला चुनावी घोषणा पत्र लाई है। इसमें महिलाओं आत्मसम्मान तथा राजनीति में शामिल होने के अधिक अवसरों को सूचिबद्ध किया गया है। 'लड़क हूँ, लड़ सकती हूं' उनका चुनावी नारा है।

प्रियंका ने कांग्रेस की छवि सुधारने के लिए राजनीतिक तौर पर कुछ सही क़दम उठाए हैं जैसे कि हाथरस दुष्कर्म मामले की पीड़िता के परिवार को सांत्वना देना, उत्तर प्रदेश से प्रवासियों के लिए परिवहन की व्यवस्था करना आदि। फिर भी संगठन के अभाव, दूसरी पंक्ति के नेताओं की अनुपस्थिति तथा धड़ेबंदी व अनुशासनहीनता के कारण कांग्रेस गिनती से बाहर हुई है। उनके कई 'माइनस' है। कुछ लोग शिकायत करते हैं कि वह पहुंच में नहीं तथा घमंडी हैं। वह गत 02 सालों में पार्टी को मज़बूत करने में सक्षम नहीं हुई। यह वास्तव में एक जुआं है कि पार्टी ने गठबंधनों के ख़िलाफ़ निर्णय लिया है। प्रियंका द्वारा पार्टी संगठन में फेरबदल ने कई वरिष्ठ तथा पुराने नेताओं को परेशान कर दिया है। उनकी निगरानी में आर.पी.एन. सिंह तथा जितिन प्रसाद जैसे वरिष्ठ नेताओं तथा 04 घोषित उम्मीदवारों ने हाल ही में पार्टी छोड़ी दी। कई लोग मानते हैं कि जब पार्टी कमज़ोर है तो उन्हें इस क्षरण को रोकना चाहिए था। बूथ कमेटियां महत्वपूर्ण हैं तथा उन्हें अवश्य इनके गठन पर ध्यान केन्द्रित करना चाहिए। यह देखना भी दिलचस्प है कि प्रियंका अपनी भूमिका को उत्तर प्रदेश से आगे फैला रही हैं, पंजाब तथा गोवा और संभवत: एक राष्ट्रीय छवि के लिए जा रही हैं। पंजाब में उछलाव के परिणामस्वरूप उनके प्रभाव के कारण ही मुख्यमंत्री कैप्टन अमरिंदर सिंह को जाना पड़ा तथा नवजोत सिंह सिद्धू की पी.सी.सी. के नए प्रमुख के तौर पर नियुक्ति की गई। उत्तर प्रदेश के चुनाव निर्णय करेंगे कि क्या प्रियंका की कैमिस्ट्री अथवा चुनावी गणित काम आया। उनकी सफलता महिलाओं तथा युवाओं को उनकी अपील पर निर्भर करेगी। यदि प्रियंकाा राज्य में कांग्रेस शासन वापस ला सकीं तो उनके जैसा कोई नहीं और यहां तक कि यदि पार्टी में सुधार भी सुनिश्चित कर सकीं तो इसके दूरगामी परिणाम होंगे। ❑❑

नबी-ए-पाक सल्लाहुअलैहि वसल्लम की जिन्दगी

नबूवत के 13वें साल बेअत अक्बा सानिया हुई। जिसमें 73 पुरुष और 2 औरतों ने इस्लाम क़बूल किया। इसी वर्ष मुसलमानों को मदीना की तरफ हिजरत करने की इजाज़त मिल गयी। इसी वर्ष कुरैश ने नाऊज़ूबिल्लाह आप (सल्ल॰) के क़त्ल का प्लान बनाया। हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम ने आकर आप (सल्ल॰) को कुरैश की साज़िश से आगाह करते हुए फरमाया कि अल्लाह तआला ने आप (सल्ल॰) को यहां से हिजरत करने की इजाज़त दे दी। इजाज़त मिलनेपर आप (सल्ल॰) ने हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रजि. अन्हा को साथ लेकर मदीना की तरफ हिजरत फरमायी।

नबी (सल्ल॰) की जीवन का मदनी दौर

जनाब नबी अकरम (सल्ल॰) के मुबारक जीवन का मदनी दौर बड़ा भयंकर दौर है, जिसमें आप (सल्ल॰) की अथक कोशिशों, मेहनतों और क़ुर्बानियों के कारण इस्लाम को प्रभुत्व प्राप्त हुआ। आप (सल्ल॰) की जांनिसार जमाअत के सरफरोशें ने इस्लाम के प्रचार प्रसार के लिए आप (सल्ल॰) के इशारों पर अपना तन-मन-धन सब कुछ लुटा दिया। रज़ि अल्लाह अन्हुम अजमईन!

हिजरत का पहला वर्ष :-

आप (सल्ल॰) ने हज़रत अबू बक़र रज़ि. अन्हा के साथ तीन दिन तक ग़ारे सूर में छुपे रहने के बाद एक रबीउल अव्वल मदीना की ओर हिजरत की। इस्लाम की पहली मस्जिद, मस्जिद कबा की बुनियाद रखी, मदीने के यहूदी और आसपास के रहने वाले कबीलों से मित्रता शांति के समझौते लिखाए गए। इसी वर्ष हज़रत सलमान फारसी रजि. ने इस्लाम स्वीकार किया। इसी वर्ष मस्जिद नबवी का भी निर्माण किया गया। अज़ान व अकामत की शुरूआत भी की गयी। अंसार और महाजरीन के बीच एक मिसाली भाईचारा क़ायम हुआ जिसकी मिसाल पूरे विश्व में नहीं मिल सकती, इसी वर्ष शव्वाल में हज़रत आएशा रज़ि. अल्लाह अन्हा की रुख़सती भी हो गयी।

हिजरत के दूसरे वर्ष मुसलमानों पर जेहाद फर्ज़ हुआ, रमज़ान के रोज़े, जक़ात सदक़ातुल फित्र और इदैन की नमाज़ें फर्ज़ हुईं। मस्जिद अकज़ा के बजाए बैतुल्लाह को जहत क़िब्ला क़रार दिया गया। फातमा अल जोहरा रज़ि॰ अल्लाह अन्हा का निकाह हज़रत अली रजि॰ से हुआ। आप (सल्ल॰) की लख़्ते जिगर हज़रत रुकैया (रजि॰) का विसाल भी इसी वर्ष हुआ। हक़ व बातिल (सच व झूठ) का पहला गज़वा बदर भी इसी वर्ष हुआ।

हिजरत के तीसरे वर्ष आप (सल्ल॰) का हिजरत हफ्सा बिन्त उमर फारूक रज़ि. अन्हा से और उसके बाद हज़रत ज़ेनब बिन्त खज़ीमा रजि. अल्लाह अन्हा से निकाह हुआ, हज़रत हसन बिन अली रजि. की विदालत हुई, आपकी लख़्ते जिगर हज़रत उम्मे कल्सूम रजि. का हज़रत उस्मान रजि. अल्लाह अन्हा से निकाह हुआ। गुस्ताख रसूल काअब बिन अशरफ और अबू राफेअ को जहन्नुम रसीद किया गया। इसी साल गज़वा ओहद का वाक्या पेश आया।

हिजरत के चौथे वर्ष अबू नज़ीर का निर्वासन हुआ, हज़रत हुसैन रज़ि. अल्लाह अन्हा की विलादत हुई इसी वर्ष आप (सल्ल॰) का हज़रत उम्म सलमा रज़ि. से निकाह हुआ और शराब के हराम होने का आदेश भी इसी साल नाज़िल हुआ। हिजरत के पांचवें वर्ष शरई परदे का आदेश नाज़िल हुआ। ज़िना की सज़ा का हुक्म हुआ। सलातुल खौफ की मश्र वईयत हुई। तमीम की इजाज़त मिली, वाक्या इफ्क हुआ और अमां आएशा रज़ि॰ अल्लाह अन्हा की शान में सूरह अल नूर नाज़िल हुई, आप (सल्ल॰) की हिजरत जवेरिया बिन्त हारिस रजि. अल्लाह अन्हा से और हज़रत ज़ैनब बिन्त हजश (रजि.) से निकाह हुआ। गज़वा-ए-खंदक, गज़वाए बनी मिस्ताक और गज़वा-ए-बेयर मऊना पेश आया जिसमें 70 सहाबा कराम (रजि.) को धोखे से शहीद किया गया।

तमाम मुसलमान भाई-भाई हैं

एक आदमी ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को देखा कि आप सूखी रोटी पानी में भिगो कर खा रहे हैं। देखने वाला हैरत में था कि मुसलमानों के जलीलुल कद्र ख़लीफ़ा सूखी रोटी पानी में भिगोकर खा रहे हैं तो अर्ज़ किया या हज़रत आप सूखी रोटी? तो आप फरमाने लगे जब तक एक आदमी भी ऐसा है जो इस क़िस्म का खाना खाता और लिबास पहनता है तो न अली (रज़ि.) उस से बेहतर खा सकता है और न उस से बेहतर लिबास पहन सकता है। इस्लाम ने उखुव्वत पर बहुत ज़ोर दिया है, नस्ली फर्क़ को इस्लाम में कोई इम्तियाज़ नहीं और इसीलिए तमाम मुसलमान आपस में भाई-भाई हैं।

मेरे राजनीतिक गुरु मुलायम सिंह है अखिलेश उनकी परंपरा आगे बढ़ायेंगे

स्वामी प्रसाद मौर्य

बसपा से वाया भाजपा-सपा में आए स्वामी प्रसाद मौर्य सियासी सुर्ख़ियों में हैं। वे सपा में आ गए, मगर उनकी सांसद बेटी संघमित्रा भाजपा में ही हैं। वे कहां से लड़ेंगे, अभी इसकी घोषणा नहीं हुई है। सपा से बेटे को ऊंचाहार से टिकट मिलने की चर्चा थी, मगर मिला नहीं। प्रतापगढ़ में जन्मे और पडरौना कर्मभूमि बनाने वाले स्वामी प्रसाद मौर्य हम भाजपा को सबक़ सिखाने के लिए सपा में आए हैं। पेश है स्वामी प्रसाद मौर्य से हुई एक बातचीत के प्रमुख अंश :-

प्रश्नः- आपके साथ आए कुछ नेताओं को टिकट मिला, कई को नहीं मिला, क्या वजह रही है.?

उत्तरः- हमारे साथ जो भी आया है, वह संविधान बचाने और भाजपा को सत्ता से हटाने के लिए आया है। टिकट या चुनाव लड़ने की बात छोटी है। बड़ी लड़ाई लड़ने के लिए छोटी-छोटी कुर्बानी देनी पड़ती हैं। हम और हमारे साथ के लोग हर कुर्बानी देने के लिए तैयार हैं। हमारा सिर्फ एक उद्देश्य है कि भाजपा को सत्ता से हटाना और समाजवादी सरकार बनाना।

प्रश्नः- फिर उनके भविष्य का क्या होगा जिन्होंने आपके कहने पर विधायक पद से इस्तीफा दिया है..?

उत्तरः- लोगों ने स्वेच्छा से इस्तीफा दिया है। हमने किसी को इस्तीफ़ा देने के लिए नहीं कहा था। हमारे साथ इतनी बड़ी संख्या में विधायकों का आना साबित करता है कि लोग भाजपा से परेशान हैं और मुझ पर भरोसा करते हैं। मैंने जो भी निर्णय लिया, उसमें उनकी सहमति है। यह भी सही है कि निरंतर साथ रहने वालों के मान सम्मान पर कभी आंच नहीं आने देंगे।

प्रश्नः- पडरौना आपकी कर्मभूमि है। अब आरपीएन सिंह भाजपा में आ चुके हैं ऐसे में क्या पडरौना से चुनाव लड़ेंगे?

उत्तरः- पडरौना का हर कार्यकर्ता अपने में स्वामी प्रसाद है। सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव का आदेश मिला तो चुनाव ज़रूर लड़ेंगे। आरपीएन सिंह पहले राजा हैं, बाद में उम्मीदवार होंगे। पडरौना की जनता राजतंत्र से मुक्ति चाहती है। यहां से कोई भी उम्मीदवार भाजपा को हराने में सफल होगा।

प्रश्नः- सपा में आने के बाद माना जा रहा था कि आपके बेटे को टिकट मिलना तय है क्या वजह है कि टिकट नहीं मिला.?

उत्तरः- सपा में शामिल होते वक़्त कोई शर्त नहीं रखी थी। बेटे के टिकट को लेकर भी कोई बात नहीं हुई है। खुद के चुनाव लड़ने के फैसले को भी सपा अध्यक्ष पर छोड़ दिया है। ऊंचाहार से मनोजर पांडेय विधायक हैं। टिकट वितरण के समय विधायक को टिकट देना पहली प्राथमिकता होती है। यही नैसर्गिक न्याय है। मेरे हर साथी कार्यप्रणाली को जानते हैं। मैंने राजनीति की शुरुआत नेताजी (मुलायम सिंह यादव) के सान्निध्य में की है। उनका हर दांव सीखा है। अखिलेश के साथ मिलकर नेताजी के सपने को साकार करेंगे।

प्रश्नः- आपकी गाड़ी बसपा से वाया भाजपा होते हुई सपा में पहुंची है। आप पर दलबदलू का आरोप लग रहा है.?

उत्तरः- हम बाबा साहेब डॉ॰ भीमराव आंबेडकर के अनुयायी हैं। संविधान से ही हमें और हमारे पिछड़े, दलित समाज को सम्मान और अधिकार मिला है। जो भी दल संविधान की अनदेखी और उसे ख़त्म करने का षड्यंत्र रचेगा, उसका विरोध करेंगे। संविधान बचाने के लिए दलबदलू या अन्य कोई भी आरोप झेलने के लिए तैयार है।

प्रश्नः- तो क्या आपकी बेटी संघमित्रा भाजपा में ही रहेंगी? आपने संघमित्रा की एक तस्वीर मुलायम सिंह यादव के साथ शेयर की थी। इसके क्या मायने हैं..?

उत्तरः- संघमित्रा सांसद हैं। उन्हें जनता ने चुनकर भेजा है। वह ख़ुद फैसले लेने में सक्षम है। वह अपने क्षेत्र की जनता से राय लेकर फैसला लेंगी। जहां तक नेताजी के साथ तस्वीर का प्रश्न है तो उनके साथ संघमित्रा की फोटो होना गौरव की बात है। खुद से बड़े लोगों का आर्शीवाद लेना हमारे संस्कार में है। नेताजी के नेतृत्व में ही पिछड़ों, दलितों को हक़ मिला है।

प्रश्नः- आपको बसपा प्रमुख मायावती का ख़ास सिपहसालार माना जाता था फिर वहां किस बात पर ठन गई.?

उत्तरः- बसपा प्रमुख ने जब तक दलितों, पिछड़ों को साथ दिया, हम उनके साथा रहे। बाद का दौर ऐसा आया कि वह कुछ लोगों के हाथ का खिलौना बन गईं। जिन संकल्पों को लेकर आगे बढ़े, उसके विपरीत चलने लगीं। ऐसे में अलग होना पड़ा।

प्रश्नः- फिर भाजपा में क्या सोच कर गए थे?

उत्तरः- प्रधानमंत्री मोदी का भाषण सुना। वे पिछड़ों की बात कर रहे थे। खुद को पिछड़ा बता रहे थे और पिछड़ों व दलितों के उत्थान का सपना दिखा रहे थे। लेकिन वहां जाने के बाद लगा कि चाल और चरित्र नहीं बदला है। चिकित्सा संस्थानों की भर्ती को लेकर कैबिनेट प्रस्ताव लाई। इसके दलितों व पिछड़ों का बैकलॉग किनारे कर दिया गया था। संविधान की अनदेखी कर, नियमों को ताक पर रखकर बिना आवेदन मांगें ही भर्ती करने की तैयारी थी। विरोध किया। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने भी माना कि हमारा विरोध सही है। बाद में फिर भर्ती करने का प्रयास किया गया। इसी दूसरे विभागों में भी मनमानी तरीके से भर्ती की जाने लगी। नियमावली की अनदेखी होने लगी। इससे हमारा मन बेहद खिन्न हुआ और हमने भाजपा को सबक़ सिखाने का फैसला लिया। ❑❑

जनता ही भाजपा से लड़ रही : हरीश रावत

प्रश्नः- चुनाव में कांग्रेस किन मुद्दों पर जनता से समर्थन मांग रही है..?

उत्तरः- कांग्रेस उत्तराखंड को आत्मनिर्भर और आगे बढ़ता हुआ प्रदेश बनाने की बात कर रही है। कांग्रेस वादा कर रही है कि स्वच्छ सरकार और स्वस्थ प्रशासन उत्तराखंड की जनता को दिया जाएगा। राज्य की आय के स्रोत बढ़ाएं जाएंगे और रोज़गार के नए अवसर पैदा किए जाएंगे। सरकारी नौकरियों में रिक्त चल रहे सभी पदों को सत्ता में आते ही भरा जाएगा। बेरोज़गारी उन्मूलन के लिए ऐसी योजना पर काम किया जाएगा, जिससे पलायन पर भी अंकुश लगाया जा सके। यह भी मुद्दा है कि भाजपा सरकार ने कोरोना काल में किस तरह से लोगों को मरने के लिए छोड़ दिया गया था।

प्रश्नः- कई सीटों पर असंतोष और बग़ावत से कैसे निपटेंगे?

उत्तरः- यह सच है कि कुछ सीटों पर ऐसे आसार बन रहे हैं। कांग्रेस पार्टी इसे मैनेज करने की कोशिश कर रही हैं जल्द ही इसके नतीजे भी सामने होंगे। आप देखेंगे कि किस तरह से सभी कांग्रेसी एकजुट होकर जनता को इस भाजपा की इस भ्रष्ट सरकार से निजात दिलाने का काम करेंगे।

प्रश्नः- हरक सिंह रावत के कांग्रेस में आने से क्या कोई फायदा होता दिख रहा है?

उत्तरः- भाजपा सरकार के एक कैबिनेट मंत्री के पार्टी छोड़ने से उनका मनोबल टूट गया है। मेरा मानना है कि हरक सिंह के आने से कांग्रेस पार्टी को और अधिक मज़बूती मिलेगी।

प्रश्नः- आम आदमी पार्टी भी इस बार सभी सीटों पर चुनाव लड़ रही है, इसे कांग्रेस पार्टी कैसे देखती है?

उत्तरः- आम आदमी पार्टी उत्तराखंड में अभी आई है। उसे इस राज्य को समझने में वक़्त लगेगा।

प्रश्नः- गैरसैंण पर कांग्रेस का क्या रुख़ है? कांग्रेस सत्ता में आती है तो गैरसैंण का क्या भविष्य रहने वाला है?

उत्तरः- कांग्रेस का वादा है कि सत्ता में आते ही गैरसैंण को उत्तराखंड की राजधानी बनाया जाएगा।

प्रश्नः- भाजपा नेता और पूर्व मुख्यमंत्री त्रिवेन्द्र सिंह रावत के चुनाव लड़ने से इंकार करने को आप कैसे देखते हैं?

उत्तरः- इससे साफ ज़ाहिर हो रहा है कि भाजपा में निराशा का माहौल है और उसके नेताओं में आत्मविश्वास ख़त्म सा हो रहा है।

प्रश्नः- इस बार चुनाव में कांग्रेस को कितनी सीटें मिलने की उम्मीद है?

उत्तरः- कांग्रेस घमंड में रहकर कोई बात नहीं करती है। हां, जनता जनार्दन से इतना ज़रूर चाहती है और प्रार्थना करती है कि इतना बहुमत ज़रूर दीजिए जिससे अगर कोई गिद्ध अपनी चोंच में कुछ को ले भी जाए तब भी कांग्रेस अपनी सरकार बना सके।

साठ पार सीटें मिलेंगी : पुष्कर सिंह धामी

प्रश्नः- चुनाव में भाजपा किन मुद्दों पर जनता से समर्थन मांग रही है..?

उत्तरः- उत्तराखंड में डबल इंजन की सरकार ने हर क्षेत्र में काम किए हैं। सड़क, हवाई मार्ग के क्षेत्र में बहुत काम किया हैं पीएम नरेन्द्र मोदी ने डेढ़ लाख करोड़ रुपये की योजनाओं का लोकापर्ण और शिलान्यास किया है। भाजपा सरकार ने पूरे पांच वर्ष समाज के हर वर्ग को मुख्यधारा से जोड़ने का काम किया है। यह चुनाव भाजपा सरकार के काम और कांग्रेस की पुरानी सरकार के कारनामों के बीच होने जा रहा है।

प्रश्नः- कई सीटों पर असंतोष और बग़ावत से पार्टी कैसे निपटेगी

उत्तरः- आप इसे बग़ावत नहीं कह सकते हैं। जिन लोगों को दावेदारी के बाद भी टिकट नहीं मिल सका है, उनसे बात की गई है। जल्द ही सभी लोग भाजपा के लिए ही काम करेंगे।

प्रश्नः- हरक सिंह रावत के आने से क्या पार्टी को नुकसान हो सकता है?

उत्तरः- भाजपा काडर आधारित पार्टी है और कार्यकर्ता ही सबसे अहम होता है। अगर कोई कार्यकर्ता से हटकर कुछ और बनने की चाह रखता है तो ऐसे लोगों के लिए भाजपा में कोई जगह नहीं है।

प्रश्नः- आम आदमी पार्टी भी इस बार सभी सीटों पर चुनाव लड़ रही है। इसे भाजपा कैसे देखती है?

उत्तरः- यह पार्टी चुनाव के समय ही आती है और फिर ग़ायब हो जाती है। उत्तराखंड की जनता ऐसी पार्टी को तवज्जोह देने वाली नहीं है। भाजपा को 'आप' से कोई फर्क नहीं पड़ने वाला।

प्रश्नः- गैरसैंण पर भाजपा का क्या रुख़ रहने वाला है?

उत्तरः- गैरसैंण निश्चित रूप से जनभावनाओं से जुड़ा मुद्दा है। भाजपा सरकार ने इसे ग्रीष्मकालीन राजधानी घोषित किया है और इसे अमलीजामा पहनाने की दिशा में काफी काम किया है। सरकार में वापसी के बाद भाजपा गैरसैंण के लिए और भी बहुत करने वाली है।

प्रश्नः- पूर्व मुख्यमंत्री त्रिवेन्द्र सिंह रावत के चुनाव लड़ने से इंकार करने को आप कैसे देखते हैं? क्या इसका कोई असर होगा?

उत्तरः- त्रिवेन्द्र जी कह चुके हैं कि वे पार्टी के लिए पूरे प्रदेश में काम करना चाहते हैं। पार्टी आलाकमान की भी मंशा है कि त्रिवेन्द्र जी की क्षमताओं का लाभ पूरे प्रदेश को मिलना चाहिए।

प्रश्नः- इस चुनाव में कांग्रेस कितनी बड़ी चुनौती है..?

उत्तरः- भाजपा के लिए इस चुनाव में कांग्रेस कोई चुनौती है ही नहीं। कांग्रेस तो टिकट बंटवारे को लेकर आपस में लड़ रही है। कांग्रेस को तो कांग्रेस के अंदर से ही चुनौती मिल रही है।

प्रश्नः- भाजपा को कितनी सीटें मिलने की उम्मीद है.?

उत्तरः- भाजपा ने इस बार साठ पार का नारा दिया है। पार्टी का हर कार्यकर्ता इस नारे को पूरा करने के लिए प्राण-पण से जुटा हुआ है। 10 मार्च को जब नतीजे सामने आएंगे तो आप देखेंगे कि भाजपा ने अपने साठ पार के नारे को किस शानदार अंदाज़ से पूरा किया है।

महात्मा गाँधी बनाम हिन्दूत्व

दक्षिण अफ्रीका से भारत लौटने के कुछ माह बाद अप्रैल 1915 में मोहनदास करमचंद गांधी दिल्ली में थे, जहां उन्होंने सेंट स्टीफंस कॉलेज के छात्रों की एक सभा को संबोधित किया। इस सभा में विभिन्न धार्मिक समुदाय के लोग मौजूद थे, जिन्हें संबोधित करते हुए गांधी जी ने अपने गुरु गोपाल कृष्ण गोखले के बारे में बात की, जिनका कुछ सप्ताह पहले ही पुणे में निधन हो गया था। गांधी जी ने कहा, 'गोखले एक हिन्दू थे, लेकिन सही ढंग के। एक बार उनके पास एक हिन्दू संन्यासी आया और उसने हिन्दुओं के राजनीतिक मुद्दों को इस तरह आगे बढ़ाने का प्रस्ताव रखा, जिससे मुसलमानों का दमन हो। उसने अपने विशेष धार्मिक कारण बताते हुए अपपने इस प्रस्ताव पर ज़ोर दिया। श्री गोखले ने उस व्यक्ति को इन शब्दों के साथ जवाब दिया ''एक हिन्दू होने के लिए यदि मुझे यह करना होगा, जैसा आप मुझसे करवाना चाहते हैं, तो कृपया विदेश में यह प्रकाशित करवा दें कि मैं हिन्दू नहीं हूं।

20वीं सदी के पहले दशक में कुछ हिन्दू राजनेताओं के साथ ही हिंदू संतों ने दावा किया कि संख्यात्मक बहुमत ने उनके समुदाय को भारत में राजनीति और शासन में वर्चस्व का अधिकार दिया है। इस विश्वास को गांधी ने जोरदार तरीक़े से ख़ारिज कर दिया। अपने गुरु गोखले की तरह ही उन्होंने भारत के बड़े धार्मिक समुदायों, हिन्दुओं और मुसलमानों के बीच पुल बनाने के लिए लगातार काम किया। इस खुले दिमाग़ और गहरे मानवीय दृष्टिकोण ने उनके अपने समुदाय के कट्टरपंथियों को नाराज़ कर दिया, जिन्होंने गांधी का उनके पूरे सार्वजनिक जीवन के दौरान विरोध किया और अंतत: चौहत्तर वर्ष पहले 30 जनवरी के दिन उनकी हत्या करने में सफल रहे।

हाल ही में आई अपनी किताब *गांधीजी असैसिन* में धीरेन्द्र के झा ने यह बताने के लिए अकाट्य साक्ष्य प्रस्तुत किए हैं कि दावों के विपरीत नाथूराम गोडसे ने 1940 के पूरे दशक के दौरान 30 जनवरी, 1948 को गांधी की हत्या तक राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ से करीबी संबंध बनाए रखा।

गोडसे की तरह ही, आरएसएस यह मानता था कि अब भी मानता है कि देश के राजनीतिक और सांस्कृतिक जीवन में पहला और श्रेष्ठ दावा हिन्दुओं का है। वह इस आधार पर सोचता और काम करता है कि हिन्दू किसी भी रूप मुस्लिमों और ईसाईयों की तुलना में स्वाभाविक और अनिवार्य रूप से कहीं अधिक भारतीय हैं। इस हिन्दू श्रेष्ठता ने आरएसएस और उससे संबद्ध संगठनों को निश्चित रूप से गांधी का विरोधी बना दिया, जैसा कि हम आगे आने वाले पैराग्राफ में देखेंगे।

आरएसएस के विपरीत, जो कि भारत में हिन्दुओं के विशेष दावे की बात करता है, गांधी मानते थे कि देश में सभी धर्म के लोगों का समान अधिकार है और वे सभी इसका प्रतिनिधित्व करते हैं। गांधी की नैतिक दृष्टि और उनके राजनीतिक व्यवहार, दोनों ने भारत के इस समावेशी विचार को मूर्त रूप दिया। इस संदर्भ में उस महत्वपूर्ण बुकलेट पर गौर कीजिए, जिसे उन्होंने अपनी पार्टी के रचनात्मक कार्यक्रम के रूप में 1945 में प्रकाशित किया था। इस कार्यक्रम का पहला तत्व था, सामुदायिक एकता, उसके बाद अस्पृश्यता उन्मूलन खादी को प्रोत्साहन, महिलाओं का उत्थान और आर्थिक समता (यह सब उन्हें प्रिय थे) जैसे विषय आए। इस महत्वपूर्ण परिचयात्मक खंड में गांधी ने लिखा, सांप्रदायिक एकता को हासिल करने के लिए पहली अनिवार्य चीज़ है कि प्रत्येक कांग्रेसी चाहे उसका धर्म कुछ भी हो, व्यक्तिगत रूप से वह खुद को हिन्दू, मुस्लिम, ईसाई, जोरास्टियन, यहूदी इत्यादि के रूप में प्रस्तुत करता हो, संक्षेप में कहें तो हिन्दू या ग़ैर हिन्दू के रूप में। उसे हिन्दुस्तान के लाखों निवासियों में से हर एक के साथ अपनी पहचान महसूस करनी होगी। इसे साकार करने के लिए प्रत्येक कांग्रेसी अन्य धर्मों का प्रतिनिधित्व करने वाले व्यक्तियों के साथ व्यक्तिगत मित्रता बनाएगा। उसे दूसरे धर्मों के प्रति वैसा ही सम्मान रखना चाहिए, जैसा कि वह अपने धर्म के प्रति रखता है।

इसके दो वर्ष बाद कांग्रेस और गांधी ब्रिटिश भारत के धार्मिक आधार पर हुए विभाजन को नहीं रोक सके। भाग्यवाद और अवसाद के आगे झुकने के बजाय, या बदले और प्रतिरोध की भावना में डूबने के बजाय गांधी ने अपनी सारी ऊर्जा उन मुसलमानों को यह आश्वस्त करने के लिए समर्पित कर दी, जो भारत में रह गए थे कि उन्हें भी समान नागरिकता का अधिकार मिलेगा। सांप्रदायिक सद्भाव के लिए सितंबर 1947 में कलकत्ता में और जनवरी 1948 में दिल्ली में किए गए उनके साहसी उपवासों के बारे में बहुत लिखा जा चुका है। एक कम ज्ञात संभवत: उतना ही महत्वपूर्ण उनका एक भाषण भी था, जो उन्होंने 15 नवंबर, 1947 को अखिल भारतीय कांग्रेस समिति की बैठक में दिया था इसमें गांधी ने कहा :

'मैं चाहता हूं कि आप कांग्रेस के मूल चरित्र के प्रति सच्चे रहें और हिन्दुओं और मुसलमानों को एक बनाएं, जिसके लिए कांग्रेस ने साठ वर्ष से अधिक समय तक काम किया है। यह आदर्श आज भी क़ायम है। कांग्रेस ने कभी यह नहीं कहा कि वह केवल हिन्दुओं के हित के लिए काम करती है। कांग्रेस के जन्म के बाद से हमने जो दावा किया है, क्या अब हमें उसे छोड़ देना चाहिए और एक अलग धुन गानी चाहिए? कांग्रेस भारतीयों की है, इस भूमि में रहने वाले सभी लोगों की, चाहे वे हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई या पारसी हों।'

गांधी की मृत्यु के कुछ सप्ताह बाद, उनके अनुयायियों का एक समूह सेवाग्राम में इस बात पर चर्चा करने के लिए मिला कि आगे क्या करना है। इसमें आरएसएस का ज़िक्र आया, सिर्फ इसलिए नहीं कि गोडसे आरएसएस का सदस्य था, बल्कि इसलिए कि आरएसएस प्रमुख एम. एस. गोलवलकर ने गांधी की हत्या से पहले कुछ द्वेषपूर्ण सांप्रदायिक भाषण दिए थे।

मार्च 1948 में सेवाग्राम में हुई गांवादियों की इस बैठक में विनोबा भावे ने टिप्पणी की, 'आरएसएस दूर-दूर तक फैल गया है और इसकी जड़ें बहुत गहरी हैं। यह चरित्र में पूरी तरह से फासीवाद है।...इस संगठन के सदस्य दूसरों को अपने विश्वास में नहीं लेते हैं गांधी जी का सिद्धांत सत्य का था, ऐसा लगता है कि इन लोगों का सिद्धांत असत्य का होना चाहिए। यह असत्य उनकी तकनीक और उनके दर्शन का अभिन्न अंग हैं।

विनोबा भावे ने गांधी के नेतृत्व वाले राष्ट्रीय आंदोलन और हिन्दुत्व के समर्थकों के बीच की विशाल खाई की भी व्याख्या कर दी। उन्होंने कहा, 'आरएसएस की कार्य प्रणाली हमारे ख़िलाफ़ रही है। जब हम जेल जा रहे थे तो उनकी नीति सेना या पुलिस में भर्ती होने की थी। जहां कहीं भी हिन्दू मुस्लिम दंगों की आशंका होती थी, वहां वे हमेशा जल्दी पहुंच जाते थे। उस समय की सरकार (ब्रिटिश राज) ने इन सब में अपना फायदा देखा और उन्हें प्रोत्साहन दिया और अब हमें परिणामों का सामना करना पड़ रहा है।'

आरएसएस के वर्तमान प्रमुख मोहन भागवत की शैली उनके कुछ पूर्ववर्तियों की तुलना में कम क्रूर है, लेकिन इसमें कोई संदेह नहीं कि वह हिन्दू वर्चस्ववाद की समान विचारधारा के समर्थक हैं (हाल ही में हरिद्वार में घृणा फैलाने वाले भाषणों पर उनकी चुप्पी इस बात का खुलासा कर रही है) 2022 में, 1948 की तरह, हिन्दुत्व की अल्पसंख्यक विरोधी विचारधारा और गांधी के बहुलतावादी और समावेशी दर्शन के बीच एक गहरी खाई बनी हुई है। उस समय की तरह, भारतीयों को इनमें से किसी का एक चयन करना होगा। हम कितने बुद्धिमान् और साहसी हैं, या हो सकते हैं, इस पर गणतंत्र का भविष्य निर्भर हो सकता है। ❑❑

नौकरी के लिए अच्छी तैयारी भी है ज़रूरी

कोई भी अच्छा एमबीए स्कूल हमेशा योग्य छात्रों को ही अपनी विविधतापूर्ण कक्षा के साथ जोड़ना चाहता है। यही दूसरे स्कूलों के लिए भी एक महत्वपूर्ण पैमाना बन जाता है जब वहां किसी छात्र के चयन का निर्णायक मूल्यांकन कर रहे होते हैं। जीमैट में अच्छे अंक लाने के बावजूद आपको निम्नलिखित वजहों से ख़ारिज किया जा सकता है।

ख़राब तरीके से बना रिज्यूमे

जब 'क्वालिटी' कार्य अनुभव को सही ढंग से पेश नहीं किया जाता है। इसमें कुछ ऐसे बेतुके अनुभव या गुण डाल दिए जाते हैं जिन पर छात्रों को तो गर्व होता है लेकिन एडमिशन कमेटी उन्हें अपने संस्थान के क्लास प्रोफाइल के लिए उपयुक्त नहीं मानते।

लेख के रूप में प्रोफाइल पेश करना

लेखों में वास्तविक जीवन के 'क्वालिटी' अनुभव होने चाहिए। जिनका ज़िक्र प्रत्येक बिन्दु के साथ किया गया हो। याद रखें कि आपके दर्जे और स्थिति की तुलना दुनियाभर के उम्मीदवारों के साथ की जा रही हैं लेख आधुनिक और प्रगतिशील शैली में होने चाहिए, जिसमें यह दिखाने की क्षमता हो कि 21वीं सदी की महिलाएं व पुरुष बहुआयामी क्षेत्रों में नेतृत्व करने की इच्छा रखते हैं। इनमें नीरस और बेचारगी के शब्द नहीं होने चाहिए।

पहले नामांकन न करना

पहले नामांकन दौर में नाम आने से आपके दाख़िले की संभावना बढ़ जाती हैं पिछले कुछ सालों में आपने दाखिले के लिए कितनी अच्छी तरह और सतर्कतापूर्ण योजना बनाई है, इसे प्रदर्शित करें। इससे एक सीट हासिल करने से कहीं ज़्यादा उस खास मुकाम पर आपके पहुंचने की उत्सुकता झलकती है।

शॉर्टलिस्टिंग

आपको ऐसा छात्र बनने की तैयारी रखनी चाहिए कि किसी दूसरे छात्र से पहले आप ही का चयन किया जाए। आपकी शार्टलिस्ट में विश्वविद्यालयों का ज़िक्र ज़रूर होना चाहिए जो कुशल ज्ञान अनुभव में योगदान करेंगे, न कि आंख मूंदकर किसी ब्रांड नाम वाले विश्वविद्यालय का चयन न कर लें। कोई ख़ास स्थान ही क्यों बड़ा फैक्टर होता है इसलिए जीमैट में अच्छे अंक की तरह ही अच्छी रैंकिंग वाले विश्वविद्यालय से आपका मक़सद हल ही नहीं हो सकता है। इन फैक्टर्स पर भी विश्वविद्यालय विचार करता है।

एलओआर

सिफारिश के पत्रों का विशेष ख़्याल रखना चाहिए। एलओआर के ज़रिये लेखों में सभी प्रगतिशीलता, विनम्रता और क्षमता का ज़िक्र किया जाना चाहिए। यही सबसे बेहतरीन फैक्टर माना जाता है दूसरे शब्दों में संस्तुति करने वाला आपकी तरफ से नेतृत्व क्षमता, टीमवर्क और सुधार क्षेत्रों में पर्याप्त उदाहरण पेश करते हुए तारीफों के पुल बांधता है। वह सहानुभूति और अच्छी विनोदपूर्णता जैसे नारीवादी या पुरुषवादी गुण भी प्रदर्शित कर सकता है।

व्यक्तिगत इंटरव्यू

यह पूरी आवेदन प्रक्रिया का एक तिहाई हिस्सा होता है। यदि आपको इंटरव्यू के लिए बुलाया गया तो समझें कि आपने आधी लड़ाई जीत ली है आप इस मौक़े का फायदा किसी भी वक्त उठा सकते हैं। दरअसल, यही गुण प्रशासनिक और प्रबंधक के क्षेत्र में कैरिअर बनाने वाले किसी छात्र में होना चाहिए। अच्छी पोशाक से लेकर शब्दों का कुशल प्रयोग करने के साथ ही आपको यह जानना ज़रूरी है कि क्या-क्या नहीं बोलना चाहिए। आप सभी स्नातक हैं और अलग-अलग प्रोफेशन में प्रशासनिक ज़िम्मेदारी निभाने जा रहे है इसलिए कुशल वाकपटुता से कभी समझौता न करें सबसे ज़रूरी बात यह है कि इसे एक औपचारिक बातचीत जितना ही मानना चाहिए और आपको इंटरव्यू करने वाले के साथ धाराप्रवाह बातचीत का आनंद लेना चाहिए। ❑❑

इस्लामी दुनिया

अफगानिस्तान में कोयले की खान ढही, दस श्रमिकों की मौत

काबुल : अफग़ानिस्तान के बाघलान प्रांत में कोयले की खान में काम करने वाले दस श्रमिकों की मौत हो गई। तालिबानी अधिकारियों ने बताया कि घटना नाहरिन जिले में स्थित चेनारक खान की है। खान में काम करने वाले श्रमिक बशीर अहमद ने बताया कि भारी बारिश में खनन किया जा रहा था, जिसकी वजह से खान ढह गई। स्थानीय जिला प्रशासक क़ारी माजिद ने बताया कि श्रमिकों के शव निकालने के लिए बचाव दल काम कर रहा है।

पाक में कब्रिस्तान की कमी के ख़िलाफ़ ईसाई सड़क पर उतरे

इस्लामाबाद : पाकिस्तान के ख़ैबर पख्तूनख्वां प्रांत में कब्रिस्तान की कमी से नाराज़ ईसाईयों ने स्वात में प्रदर्शन किया। इसाईयों ने समस्या का समाधान नहीं होने पर नगर पालिका चुनाव का बहिष्कार करने का ऐलान किया है। कराची में भी सैकड़ों ईसाईयों ने सड़क पर उतरकर भूमाफियाओं द्वारा संपत्ति घर और ज़मीन से बेदख़ल किए जाने का आरोप लगाया। बीते दिनों एक ईसाई पादरी की पेशावर में कुछ बंदूध ारियों ने हत्या कर दी थी इस घटना के बाद से ईसाईयों में भारी रोष है।

म्यांमार की सैन्य अदालत ने सू की के ख़िलाफ़ सुनवाई टाली

नेपीदा : म्यांमार की एक सैन्य अदालत ने आंग सान सू की के ख़िलाफ़ जारी मुक़दमे की सुनवाई को स्थगित कर दिया है। बताया जा रहा है कि तख़्ता पलट के बाद सेना की क़ैद में मौजूद सू की फिलहाल अस्वस्थ हैं। सेना ने सू की पर हेलिकॉप्टर खरीद में भ्रष्टाचार का आरोप लगाया है। इस केस में उन्हें अदालत में पेश किया जाना था। अमेरिका के रेडियो फ्री एशिया ने बताया कि सू की को डॉक्टर के अनुरोध पर सुनवाई से छूट दी गई।

पाक में मिली 1800 वर्ष पुरानी बौद्ध कलाकृतियाँ

पेशावर : पाकिस्तान में पुरातत्वविदों ने ख़ैबर पख्तूनख्वां प्रांत में 1800 साल पुरानी बौद्ध कलाकृतियों की खोज की है। स्वाबी जिले के बाबू धेरी गांव में बुद्ध रूप सहित 400 विभिन्न कलाकृतियां मिली हैं। ख़ैबर पख्तूनख्वा प्रांत के पुरातत्व विभाग के निदेशक डॉ. अब्दुस समद ने बताया कि खुदाई का काम छह माह पहले शुरू हुआ था और पुरातत्व विभाग ने अब कलाकृतियों के संरक्षण का काम शुरू कर दिया है। हाल के दिनों में ख़ैबर पख्तूनख्वां में ऐसी कई पुरातात्विक खोजें हुई हैं। पिछले वर्ष दिसंबर में पुरातत्वविदों की एक संयुक्त उत्खनन टीम ने 2300 वर्ष पुरानी बौद्ध मंदिर और कुछ अन्य कलाकृतियों को खोजा था।

डॉ॰ चन्द्र त्रिखा

जब अटल जी गए 'फैज़' से मिलने

जब ज़हर की बारिश हो रही हो, तेज़ाबी भाषा में भाषण पिलाए जा रहे हों और अपने ही देश में एक दूसरे को जमकर लताड़ने का सिलसिला जारी हो तो बेहतर है कुछ अच्छे सियासतदानों की अच्छी बातें याद कर ली जाएं। उन दिनों देश में पहली ग़ैर कांग्रेसी सरकार थी। अटल बिहारी वाजपेयी तब विदेश मंत्री थे। वह पाकिस्तान के आधिकारिक दौरे पर गए थे। विदेश मंत्री का अलग प्रोटॉकोल होता है। आना जाना, मिलना जुलना सब पहले से होता है। अटल बिहारी वाजपेयी के लिए भी प्रोटोकॉल था। उन्हें उसी का पालन करना था लेकिन वह नहीं मानें। उन्हें उर्दू शायर फैज़ से मिलना था। वो प्रोटोकॉल तोड़कर फैज़ से मिलने उनके घर गए।

फैज़ अहमद 'फैज़' तब एशियाई अफ्रीकी लेखक संघ के प्रकाशन अध्यक्ष थे। बेरुत (लेबनान) में कार्यरत थे। वह उन दिनों संयोगवश पाकिस्तान आए हुए थे। सब चकित रह गए। दोनों (फैज़ और अटल) दो अलग अलग तरह से सोचने वाले। फिर भी मिले। अटल बिहारी वाजपेयी ने मिलते ही कहा, मैं सिर्फ एक शेर के लिए आपसे मिलना चाहता था। फैज़ ने शेर पढ़ने कहा कहा। अटल बिहारी वाजपेयी ने फैज़ की एक मशहूर गज़ल का शेर पढ़ा :

मक़ाम 'फैज़' कोई राह में जंचा ही नहीं
जो कू-ए-यार से निकले तो सू-ए-दार चले

(कू-ए-यार : यार की गली, सू-ए-यार मौत की तरफ (दार: सूली)।

यह सुनकर फैज़ भावुक हो गए। उन्होंने पूरी गज़ल सुनाई। दोनों काफी देर साथ रहे और फिर अटल बिहारी वाजपेयी उन्हें भारत आने का न्यौता देकर लौट आए। फैज़ उसके बाद 1981 में भारत आए और दिल्ली में अटल जी से उनके आग्रह पर मिले भी। अटल बिहारी वाजपेयी ने जिस गज़ल के एक शेर के लिए प्रोटोकॉल तोड़ दिया था, वो गज़ल थी –

गुलों में रंग भरे,
बाद-ए-नौ बहार चले
चले भी आओ कि
गुलशन का कारोबार चले
कफस उदास हैं यारो,
सबा से कुछ तो कहो
कहीं तो बहर-ए-खुदा
आज ज़िक्र-ए-यार चले
बड़ा है दर्द का रिश्ता,
ये दिल ग़रीब सही
तुम्हारे नाम पे आएंगे गमगुसार चले
मक़ाम 'फैज़' कोई राह में जंचा ही नहीं
जो कू-ए-यार से निकले
तो सू-ए-दार चले

यह गज़ल फैज़ ने जनवरी 1954 में लिखी थी। तब वह पाकिस्तान के मांटुगुमरी (अब साहीवाल) जेल में थे। वह 1951 से 1055 तक पाकिस्तान की जेल में क़ैद रहे। जब वह जेल से थे तो आरोपों के आधार पर यह माना जा रहा था कि उन्हें फांसी की सज़ा होगी, पर जुर्म साबित न हो सका।

ख़ैर, फैज़ भारत और पाकिस्तान, दोनों मुल्कों के लोगों के पसंदीदा शायर थे, सो यहां भी कई शहरों और विश्वविद्यालयों में उनका काव्य पाठ आयोजित था। एक कार्यक्रम जेएनयू में भी था। प्रोग्राम के दौरान वहां उनकी प्रसिद्ध नज़्म 'रकीब' पढ़ने को कहा गया, वो आधी नज़्म पढ़कर बैठ गए। छात्रों ने पूछा कि आधी नज़्म ही क्यूं सुनाई तो फैज़ साहब ने जवाब दिया –'

'जहां तक सुनाया वहीं तक असली नज़्म है बाकी का हिस्सा तो अति प्रगतिशीलता की नारेबाज़ी है।' फैज़ बेहद बेबाक थे और अटल के बेहद करीबी थे। उनकी एक और नज़्म 'हम देखेंगे', भी अटज को बेहद पसंद थी।

फैज़ उम्रभर पाकिस्तान की सैनिक हुकूमत का विरोध करते रहे। उनकी ज़िन्दगी के लगभग 5-6 बरस पाकिस्तानी सेना की जेल में कटे थे। दिल्ली आए तो अटल जी के निमंत्रण पर उन्हें मिलने भी गए। अटल जी कुछ अलग किस्म के इंसान थे। उनसे कुछ सीखने के लिए भी व्यापक सोच चाहिए।

अब ज़रा 09 फरवरी 1999 की तारीख़ पर भी नज़र डाल लें। वह पड़ोसी देश से संबंधों की बेहतरी के लिए दोस्ती की एक बस लेकर पाकिस्तान गए थे। उस बस में अपपने साथ वह देवानंद, क्रिकेटर कपिल देव, नृत्यांगना मल्लिका साराभाई, शायर जावेद अख़्तर, अभिनेता शत्रुघ्न सिह्रा, पत्रकार कुलदीप नायर आदि प्रबुद्ध लोग भी साथ ले गए थे।

तब वाजपेयी ने सीमा पा करते ही एक नज़्म पढ़ी थी –

हम जंग नहीं होने देंगे
तीन बार लड़ चुकें लड़ाई
कितना महंगा सौदा भाई

सीमा पार करते ही स्वात करने वालों में तत्कालीन प्रधानमंत्री नवाज़ शरीफ व उनके अदीब व पत्रकार मौजूद थे। तय यही था कि अटल जी वहां से लौट जाएंगे। मगर नवाज़ शरीफ़ का आग्रह था 'दर तक आए हो/घर नही आआगे?' अटल जी टाल नहीं सके। लाहौर तक गए। वहां पर लाहौर के क़िले में स्वागत समारोह था। इस समारोह की संयोजक व मंच संचालक फैज़ की बेटी सलीमा हाशमी थी।'

पाकिस्तान से दोस्ती की यह पहलक़दमी अच्छी नहीं रही थी। बाद में कारगिल युद्ध भी लड़ना पड़ा। मगर जब भूगोल बदले नहीं जा सकते तो सुखद प्रयास छोड़ नहीं दिए जाते। नफ़रत, हिकारत और विष वर्षा का आज का मौसम स्थायी भी तो नहीं रखा जा सकता।

अब जिस तरह की भाषा अपने ही देश के लोगों के ख़िलाफ़ प्रयोग करते हैं, वह कब तक जारी रखी जा सकेगी, सवाल यही है। अच्छी पहलक़दमी में हर बार सफलता नहीं मिली, मगर सोच अच्छी हो तो 'पोखरण' की तैयारी भी चलती है और 'सदा-ए-सरहद' सरीखी बसें भी। यह अलग बात है कि पाकिस्तान के सत्ताधीश आज भी विश्वास के काबिल नहीं हैं। इसी मामले में थोड़ा ज़िक्र एनडीटीवी के उद्घोषक कमाल ख़ान का। बनारस में गंगा आदती मकर संक्रांति के अवसर पर उसी के नाम पर समर्पित की गई। यही है हमारा असली भारत। ❑❑

शेष.... ध्रुवीकरण की सबसे ज़्यादा मार...

योगी प्रतिशत की कुछ भी व्याख्या करें, पर देश की बीस प्रतिशत आबादी के प्रति उनका रुख किसी से छिपा नहीं है।

राजनेताओं को भले ही यह सौदा फायदे का लगता हो, पर उनका यह चुनावी गणित सारे देश की समरसता और एकता का संतुलन बिगाड़ने वाला है। ऐसा नहीं है कि चुनावों में धार्मिक भावनाओं को उभारने और उनका चुनावी लाभ उठाने का काम पहले नहीं होता था, पर पिछले कुछ सालों में यह खतरनाक प्रवृत्ति लगातार बढ़ी है। समूचि राजनीति को मात्र चुनावी लाभ की नज़र से देखने वाले हमारे राजनेताओं को उन मुद्दों की कोई चिंता नहीं है जिनका देश की जनता के हितों से सीधा रिश्ता है।

आज देश के सामने बेरोज़गारी एक गंभीर समस्या है। सरकार के सारे दावों के बावजूद देश में बेरोज़गारों की संख्या लगातार बढ़ रही है। ऐसा ही दूसरा मुद्दा महंगाई है। आंकड़े बता रहे हैं कि पिछले दो सालों में देश में मध्यम वर्ग का आकार सिकुड़ा है, अर्थात् मध्यम वर्ग वाले एक सीढ़ी नीचे उतर गए हैं। यह वही वर्ग है जो महंगाई की मार सबसे ज़्यादा झेल रहा है। आख़िर क्या कारण है कि महंगाई और बेरोज़गारी हमारे राजनेताओं को चिंतित नहीं करती? क्यों हमारे राजनेता मतदाताओं को कभी धार्मिक उन्माद की खुराक देते हैं और कभी संस्कृति के नाम पर राष्ट्रवाद की भावनाएं भड़काने की कोशिश करते हैं? मतदाताओं को हिन्दू मुसलमान में बांटना कोई ग़लत नहीं, एक अपराध है। गंभीर अपराध! खुलेआम अस्सी प्रतिशत बनाम बीस प्रतिशत की बात करके हमारे नेता यही अपराध कर रहे हैं। सवाल उठता है कि धर्म राजनीति का विषय बने ही क्यों? कोई किस विधि से पूजा-अर्चना करता है, यह उसका निजी निर्णय है। व्यक्ति की अपनी आस्था होती है, अपनी श्रद्धा होती है। इस आस्था श्रद्धा का राजनीतिकरण किसी के फायदे की चीज़ हो सकती है, पर इस प्रवृत्ति के चलते घाटे में हम ही रहते हैं, हम यानि भारत के लोग जिन्होंने अपने संविधान में सेक्युलर होने की शपथ ली है, जिन्होंने सोच समझकर देश के हर नागरिक को समानता का अधिकार दिया है। धर्म, जाति, वर्ण, वर्ग के नाम पर भारतीय समाज को बांटने की कोई भी कोशिश हमारे संविधान का उल्लंघन है, अपराध है और यह सब कुछ होते हुए देखते रहना भी एक अपराध से कम नहीं है। सह-अस्तित्व हमारे राष्ट्रीय चरित्र की गौरवशाली परंपरा और विशेषता है।

आज यदि कोई सबके विकास की बात करता है तो उसका सिर्फ यही अर्थ हो सकता है कि एक अरब तीस करोड़ भारतवासी साथ मिलकर विकास की राह पर आगे बढ़ें। चुनाव एक व्यवस्था है जो हमने अपने लिए स्वीकारी है, हम चुनाव के लिए नहीं बने इसलिए चुनाव में सफलता के लिए यदि हमें यानि भारतीयों को बांटने की कोशिश की जाती है तो इस कोशिश का हर संभव तरीक़े से विरोध होना चाहिए। प्रश्न अस्सी प्रतिशत बीस प्रतिशत का नहीं, पूरे सौ प्रतिशत का है राजनेताओं से निवेदन है कि देश के मतदाता को भारतीय ही बना रहने दें। उनको बांटकर अपने स्वार्थ सिद्ध के लिए प्रयोग करना बन्द करें। इस महान देश की गौरवशाली परंपरा और उसूलों को बनाए रखने के लिए हर भारतीय को एक साथ मिलकर रहना होगा।

हम सब भारतीयों को निष्पक्ष होकर बिना किसी धार्मिक प्रवृत्ति से प्रभावित होकर मतदान करना होगा, तभी जाकर हमारी आने वाली पीढ़ियों महान भारतीय परंपरा सही सलामत सौंप पाएंगे, अन्यथा आने वाली पीढ़ियों की जो दुर्दशा होगी उसके हम ही ज़िम्मेदार होंगे। भारत देश महान है और यहां की जनता ''एकता में अनेकता'' भारत को और महान बनाती है, विभिन्न धर्म, समुदाय मिलजुल रहने से ही ये देश महान बनेगा। ❑❑

मायावती का इतिहास

उन्हें जनतंत्र का जादू बनाता है

विजय त्रिवेदी

दिसंबर, 1977 की कड़कड़ाती ठण्ड की रात 10 बजे दिल्ली के इंदरपुरी इलाके में उस घर की कुंडी खटखटाने की आवाज़ आई। दरवाज़ा खोला 21 साल की मायावती ने। उन्होंने देखा कि बाहर गले में मफलर डाले, सलवट पड़े कपड़ों में एक अधेड़ शख़्स खड़ा है। उन्होंने अपना परिचय देते हुए बताया कि वो बामसेफ के अध्यक्ष कांशीराम हैं, मायावती को पूणे में एक कार्यक्रम में भाषण देने के लिए आमंत्रित करने आए हैं।

उस समय मायावती अपने घर में लालटेन की रौशनी में पढ़ रही थीं, तब उनके घर में बिजली नहीं होती थी। तब तब उनके पिता प्रभू दयाल भी वहां आ गए। इससे एक दिन पहले दिल्ली के कॉन्स्टिट्यूशन क्लब में उस समय के स्वास्थ्य मंत्री राजनारायण अपने भाषण में दलितों को बार-बार हरिजन कह कर संबोधित कर रहे थे। उनके भाषण के बाद जब युवा मायावती का बोलने का नंबर आया तो उन्होंने राजनारायण पर ज़बरदस्त हमला बोला। मायावती ने ज़ोर देकर कहा, आप हमें हरिजन कहकर अपमानित कर रहे हैं।

कांशीराम की जीवनी लिखने वाले बद्री नारायण के मुताबिक कांशीराम ने मायावती से पहला प्रश्न पूछता, तो क्या करना चाहती हैं, मायावती ने कहा कि वो आईएएस बनना चाहती है, ताकि अपने समाज की सेवा कर सकें। कांशीराम ने कहा, तुम आईएएस बन कर क्या करोगी, मैं तुम्हें ऐसा नेता बना सकता हूं, जिसके पीछे दसियों कलेक्टरों की लाइन लगी रहेगी और उससे तुम ज़्यादा अच्छे से अपने लोगों की सेवा कर पाओगी

पीएम नरसिंहा राव ने मायावती को जनतंत्र का जादू कहा था

मायावती कांशीराम के साथ उनके आंदोलन में शामिल हो गई। उनके पिता इस क़दम के ख़िलाफ़ थे। मायावती ने अपनी आत्मकथा बहुजन आंदोलन की राह में मेरी जीवन संघर्ष गाथा में लिखा कि एक दिन उनके पिता उन पर चिल्लाए 'तुम कांशीराम से मिलना बंद करो और आईएएस की तैयारी शुरू करो, वना मेरा घर छोड़ दो। मायावती ने पिता का घर छोड़ दिया और पार्टी ऑफिस में आकर रहने लगीं। मायावती के संघर्ष की यूं तो लंबी कहानी है, लेकिन उसके बाद मायावती ने पीछे मुड़कर नहीं देखा।

वो चार बार उत्तर प्रदेश की मुख्यमंत्री रहीं हैं। बहुजन समाज पार्टी की अध्यक्ष मायावती इस बार विधानसभा चुनाव नहीं लड़ रहीं हैं। इस बार उनकी कम सक्रियता को लेकर राजनीतिक दल उन्हें निशाने पर लेते रहे हैं। समाजवादी पार्टी इसे भारतीय जनता पार्टी के सहयोग के तौर पर देखती है, लेकिन मायावती खुद पर होने वाले हमलों को गंभीरता से नहीं लेतीं और जो उन्हें ठीक लगता है उसी रास्ते पर चलती हैं। यही उनकी ताक़त भी है, वरना मौजूदा राजनीतिक हालात में किसी दलित महिला का इतना ताक़तवर होना नामुमकिन सा लगता है।

मायावती उस अपमान को शायद ही कभी भूल पाएं-

मायावती कांशीराम के साथ उनके आंदोलन में शामिल हो गई। उनके पिता इस क़दम के ख़िलाफ़ थे। मायावती ने अपनी आत्मकथा बहुजन आंदोलन की राह में मेरी जीवन संघर्ष गाथा में लिखा कि एक दिन उनके पिता उन पर चिल्लाए 'तुम कांशीराम से मिलना बंद करो और आईएएस की तैयारी शुरू करो, वना मेरा घर छोड़ दो। मायावती ने पिता का घर छोड़ दिया और पार्टी ऑफिस में आकर रहने लगीं। मायावती के संघर्ष की यूं तो लंबी कहानी है , लेकिन उसके बाद मायावती ने पीछे मुड़कर नहीं देखा।

02 जून 1995 की शाम चार बजे लखनऊ के गेस्ट हाऊस के उनके सुइट पर करीब दो सौ मुलायम सिंह समर्थकों ने हमला बोल दिया था। गेस्ट हाउस का मेन गेट तोड़ दिया था। गेस्ट हाउस का मेन गेट तोड़ कर वो अंदर घुस गए और उन्होंने मायावती समर्थकों की जमकर पिटाई की। माययावती के लिए गालियां और अपशब्दों का इस्तेमाल किया। उनके कमरे की लाइटें और पानी का कनेक्शन काट दिया। कमरे में रात एक बजे तक वो क़ैद रहीं, लेकिन अगले ही दिन उनकी राजनीतिक किस्मत बदल गई। मायावती ने मुलायम का साथ छोड़कर भारतीय जनता पार्टी का साथ लिया और उनके सहयोग से सरकार बना ली। 03 जून 1995 को वो पहली बार मुख्यमंत्री बनीं। उस दिन तब के प्रधानमंत्री नरसिंहा राव ने मायावती को मुख्यमंत्री के तौर पर जनतंत्र का जादू कहा था।

राजनीतिक जानकारों ने बताया कि बहुजन समाज पार्टी के नेता कांशीराम ने मुलायम सिंह को समझाया था कि वो समाजवादी नेता चन्द्रशेखर का साथ छोड़कर अलग पार्टी बना लें। दलित और पिछड़ों को साथ लेकर चलने की राजनीति होगी तो जल्दी हासिल कर लेंगे। चन्द्रशेखर को कांशीराम ने राजपूत नेता कहा था, जिनकी वजह से दलित साथ नहीं आते। मुलायम सिंह ने चन्द्रशेखर का साथ छोड़कर नई पार्टी बना ली - समाजवादी पार्टी।

मायावती पहली दलित महिला मुख्यमंत्री

वर्ष 1993 में यूपी में भाजपा को हराने के लिए दिल्ली के अशोका होटल में कांशीराम और मुलायम सिंह यादव के बीच गठबंधन हो गया। नारा दिया - मिले मुलायम-कांशीराम, हवा में उड़ गए जय श्रीराम। 06 दिसंबर 1992 में बाबरी मस्जिद गिराने जाने और उससे पहले राम रथ यात्रा से भाजपा के पक्ष में ख़ासा माहौल दिख रहा था, लेकिन जब चुनाव नतीजे आए तो समाजवादी पार्टी को 109 और बहुजन समाज पार्टी को 67 सीटें मिलीं, हालांकि भाजपा को दोनों दलों से एक ज़्यादा 177 सीटें मिली थीं। दोनों ने मिलकर यूपी में पहली बार सरकार बनाई, लेकिन यह प्रयोग ज़्यादा दिन नहीं चल पाया। दोनों दलों के बीच की खटपट का नतीजा हुआ 'गेस्ट हाउस कांड'। तब वो 136 दिनों तक मुख्यमंत्री रहीं। मायावती पहली दलित महिला मुख्यमंत्री हैं।

मायावती दूसरी बार 1997 में तीसरी बार 2002 में और चौथी बार 2007 में मुख्यमंत्री बनीं। वैसे देश में किसी भी राज्य की पहली महिला मुख्यमंत्री सुचेता कृपलानी रहीं। उन्होंने 02 अक्तूबर 1963 से तीन मार्च 1967 तक मुख्यमंत्री रहीं। क्या इसे संयोग कह सकते हैं कि दिल्ली के सुचेता कृपलानी अस्पताल में ही 15 जनवरी 1956 को मायावती का जन्म हुआ था? वर्ष 1996 में हुए विधानसभा चुनावों में बसपा ने कांग्रेस के साथ गठबंधन किया, तब बसपा ने 315 सीटों पर और कांग्रेस ने 110 सीटों पर चुनाव लड़ा था, मगर इस गठबंधन को सौ सीटें मिलीं। तब के कांग्रेस अध्यक्ष नरसिंह राव ने यह दोस्ती कांशीराम से की थी। कांग्रेस इस गठबंधन को अब तक अपनी सबसे बड़ी भूल मानती है। तब कांशीराम ने कहा था- आज के बाद हम किसी पार्टी के साथ गठबंधन नही करेंगे। हमारे वोट तो दूसरी पार्टी को ट्रांसपर हो जाते हैं, लेकिन दूसरी पार्टी के वोट हमें कभी ट्रांसफर नहीं होते। उस वक्त किसी दल को बहुमत नहीं मिला। कोई राजनीतिक दल जब सरकार बनाने की स्थिति में नहीं था तो राष्ट्रपति शासन लगा दिया गया, काफी दिनों तक तमाम राजनीतिक कोशिशें होती रहीं। फिर एक जनवरी 1997 में चेन्नई में एक वरिष्ठ पत्रकार टीवी और शेनॉय के घर पर बेटी की शादी ने नयी राजनीतिक जोड़ी का गठजोड़ बना दिया। इस समारोह में भाजपा और दूसरे राजनीतिक दलों के नेताओं के साथ कांशीराम भी आमंत्रित थे।

समारोह में राजनेता एक दूसरे से बातचीत कर रहे थे तभी कांग्रेस के उत्तर प्रदेश में अध्यक्ष जितेन्द्र प्रसाद ने ज़ोर देकर कहा, देखो, देखो वहां एक और शादी हो रही है। उनका इशारा दूसरे कोने में भाजपा नेता लालकृष्ण आडवाणी और कांशीराम के बीच चल रही बातचीत को लेकर था। करीब एक पखवाड़े बाद जब दिल्ली में शेनॉय की बेटी का रिसेप्शन समारोह हो रहा था, तब तक बसपा और भाजपा के बीच तालमेल को लेकर बात आगे बढ़ चुकी थी। विधानसभा चुनावों के बाद भी किसी दल की सरकार नहीं बन पाने की वजह से बसपा नेता भाजपा से दोस्ती के लिए तैयार हो गए। भारतीय जनता पार्टी में भी कल्याण सिंह मायावती के ख़िलाफ़ खड़े थे। ❑❑

ख़ास ख़बरें

यूक्रेन पर रूस को चीन का साथ

यूक्रेन संकट को लेकर चीन ने रूस के सुर में सुर मिलाते हुए अमेरिका से कहा है कि मसले का शांतिपूर्ण हल निकालने के लिए अमेरिका को नाटो का पूर्वी यूरोप में विस्तार रोकने का वादा करना होगा। बदले में रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने भी ताइवान पर चीन के हक़ को स्वीकार किया। चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग के साथ पुतिन की हाल की मुलाकात के बाद जारी संयुक्त बयान में इस मसले के शांतिपूर्ण समाधान पर ज़ोर दिया गया। पुतिन के सलाहकार उशाकोव ने बताया, रूसी राष्ट्रपति ने ताइवान को चीन का हिस्सा माना।

इंडोनेशिया में फैला एंथ्रैक्स कई पशुओं की हुई मौत

जकार्ता : इंडोनेशिया में एंथ्रेक्स फैलने से कई पशुओं की मौत हो गई। अधिकारियों ने पिछले दिनों बताया कि जावा द्वीप के दो गांवों को रेड जोन घोषित किया गया है। प्रभावित गांवों के खेतों में पशुओं की आवाजाही पर प्रतिबंध भी लगाया गया है। गुनुंग किदुल क्षेत्र के कृषि अधिकार केलिक यूनियांतारो ने बताया कि 15 पशुओं की मौत हुई, जिनमें से सात में एंथ्रैक्स की पुष्टि हुई। इसके अलावा 23 लोगों में भी संक्रमण के लक्षण दिखे हैं, जो इन पशुओं के संपर्क में आए थे

सिंगापुर के पीएम की नक़ल पर भारतवंशी हुए मशहूर

सिंगापुर : सिंगापुर के प्रधानमंत्री ली सीन की नक़ल करने की वजह से भारतीय मूल का 31 वर्षीय कॉमेडियन दास सिंगापुर में मशहूर हो रहा है। धर्मदास डी धरमहसेना को लोग दास के नाम से जानते हैं। दास 2020 में प्रधानमंी ली के सर्किट ब्रेकर संबोधन की नक़ल करने के बाद काफी मशहूर हुए। वीडियो इतना चर्चित हुआ कि पीएम भी इसे देखा और दास को भेजे संदेश में कहा, उन्हें इसे देखने में मज़ा आया।

कोविड के बीच अमेरिका में 4,67,000 को नौकरी

वाशिंगटन : कोविड संक्रमण के बीच अमेरिका में जनवरी में 4,67,000 लोगों को नौकरियां मिलीं हैं। महामारी के दौर में लाखों लोगों को रोज़गार खोना पड़ा। लेकिन अब रेस्तरां, विनिर्माण समेत सभी क्षेत्रों में बड़ी संख्या में रोज़गार मिले हैं हालांकि, श्रम विभाग के मुताबिक, जनवरी में बेरोज़गारी दर 3.9 प्रतिशत से बढ़कर 4 फीसदी हो गई, विशेषज्ञों के मुताबिक, बेरोज़गारी डर और नौकरियां खोने वालों की संख्या बढ़ने के साथ जनवरी से मार्च में अर्थव्यवस्था धीमी हो सकती है।

आप सल्ल॰ और सहाबा की ज़िन्दगी दीने इलाही के पैरवी थी

जिस तरह अल्लाह तबारक व तआला ने नबूवत की तकमील के लिए हज़रत मौहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का चयन फरमाया और आप (सल्ल॰) की ज़ात को इस के लिए हर तरह से तैयार किया फिर आप पर तब्लीग़ रिसालत का भार डाला और कुरआन करीम नाज़िल करके इंसानी दुनिया को इसकी शिक्षाओं से रोशनास कराने की तल्क़ीन की। इसी तरह आप (सल्ल॰) के लिए जो साथी चयनित किए गए वह अपने आप में बड़ी महत्ता के पात्र थे इनकी ज़िन्दिगयां आप (सल्ल॰) की आदम, बईश्त और आप (सल्ल॰) पर ईमान लाने से पहले अजीब व ग़रीब विरोधाभासों का शिकार थीं, वह अमल के कोरे फिक्र व नज़र से ख़ाली, अख़्लाकियात से आरी, बेहंगम ज़िन्दगी गुज़ारने के आदी, शराबे नाब के रसिया और हर तरह की बुराइयों के दिल दादाह थे। मगर जूं ही नबी पाक (सल्ल॰) की निगाहें रहमत इनकी ओर केन्द्रित हुई इनके ज़ाहिर व बातिन की काया पलट कर रह गयी। फिर इनकी ज़िन्दगियों में ऐसा इंक़लाब आया कि इसकी मिसाल इस दुनिया ने न तो पूर्व के लम्बे मानवीय इतिहास में कभी देखी थी और न भविष्य के दिनों में ऐसा हो पाया, वह दौर जिसमें नबी पाक (सल्ल॰) अपने असहाब के साथ इस दुनिया में मौजूद रहे, जो कुल 23 वर्ष के समय, पर आधारित है वह इंसानी इतिहास का अफज़लतरीन, बेहतरीन हैरतअंगेज़, इंक़लाबों का केन्द्र, हक़ की सरबुलंदी और बातिल की पराजय व आत्मसमर्पण का ऐसा नमूना था जिसे हर कोई देख और महसूस कर सकता था।

आप (सल्ल॰) को सहाबा की जो जमाअत मिली थी वह आप (सल्ल॰) ही की तरह चयनित थी अल्लाह ने ख़ासतौर से आपकी मुसाहबत के लिए ही उन्हें पैदा किया था, इस्लाम लाने के पहले वह बुराईयों की पोट थे मगर दामने इस्लाम से जुड़ाव के बाद वह ऐसे बदले कि ख़ुद अच्छाईयां इन पर रश्क़ करने लगीं, शराफ़त को इनसे दवाम मिला, हक़ परस्ती को आबरू नसीब हुई, सदक़ व सफा के मोती इन्हीं के ज़रिए चमके, अख़्लास व वफा को वक़ार व ऐतबार मिला। सहाबा की सीरत आदत, बल्कि इनकी पूरी ज़िन्दगी में जो तब्दीली हुई, इसमें एक तो ख़ुद इलाही मसलहत का दख़ल था कि अल्लाह-तबारक तआला ऐसा ही चाहते थे चुनाँचे ऐसा ही हुआ मगर इसके साथ-साथ एक और बात यह भी थी कि इन लोगों को रसूले (सल्ल॰) ख़ुदा जैसी मरबी, कामिल, बेलौश मोहसिन शफीक़ उस्ताद मिला। लिसान अल अस्र, अकबर इलाहाबादी ने नबी पाक (सल्ल॰) की पुर तासीर नज़र और सहाबा कराम की ज़िन्दगी में आने वाले हैरतअंगेज़ इन्क़लाब की तरफ इशारा करते हुए खूब कहा है :-

ख़ुदा न थे जो राह पर औरों
के हादी बन गए
क्या नज़र थी जिसने मर्दों को
मसीहा कर दिया!

कुरआन करीम में जगह-जगह सहाबा ए रसूल के औसाफ़ बयान किए गए हैं। राहे हक़ में इनकी कुर्बानियों का ज़िक्र किया गया है, इनके मरतबे आलिया की वज़ाहतें की गयीं हैं और दुनिया ही में इन्हें रज़ा-ए-इलाही की ख़ुश खबरियों से नवाज़ा गया है। सूरह अलफतह की एक लम्बी आयत है जिसमें सहाबा कराम की अमली विशेषताओं का ज़िक्र है, अल्लाह तबारक व तआला इरशाद फरमाता है ''मौहम्मद अल्लाह के रसूल हैं और जो लोग

सहाबा की सीरत आदत, बल्कि इनकी पूरी ज़िन्दगी में जो तब्दीली हुई, इसमें एक तो ख़ुद इलाही मसलहत का दख़ल था कि अल्लाह-तबारक तआला ऐसा ही चाहते थे चुनाँचे ऐसा ही हुआ मगर इसके साथ-साथ एक और बात यह भी थी कि इन लोगों को रसूले ख़ुदा जैसी मरबी, कामिल, बेलौश मोहसिन शफीक़ उस्ताद मिला।

इनके साथ हैं वह कुफ़्फ़ार पर सख़्त और आपस में रहम दिल हैं तुम उन्हें रुकू और सज्दे में मशगूल पाओगे, वह अल्लाह के फज़ल और उसकी सज़ा की तलब में लगे रहते हैं। इनकी निशानियां (शनाख़्त नामे) इनकी पेशानियों पर हैं सज्दों की वजह से। यही इनकी सिफ्त तौरयत में भी बयान की गयी) है और इन्जील में इनकी मिसाल यूँ दी गयी है कि गोया एक खेती है जिसने पहले कोंपल निकाली, फिर उसको तकवीयत दी, फिर इसमें और मज़बूती आयी, फिर वह अपने तने पर खड़ी हो गयी ताकि कुफ़्फ़ार इनके फलने-फूलने पर जलें। इनमें से जो लोग ईमान लाए और नेक अमल किया इनके लिए अल्लाह ने मग़फरत और अज्र अज़ीम का वादा किया है।''

सहाबा कराम की ज़िन्दगियों की नक्शाकशी इससे ज़्यादा जामेअ अंदाज़ में नही हो सकती। अल्लाह तबारक व तआला ने इनकी हर खसूसियत को इस आयत में खोल कर रख दिया है, यूं तो इनकी यही विशेषता सबसे बड़ी थी कि उन्होंने अल्लाह के महबूब नबी (सल्ल॰) को देखा इनकी जनाब में बारयाबी का शर्फ हासिल किया था मगर इनके साथ मिलकर इलाह हक़ के रास्ते में उन्होंने जिस जाँ सुपारी के साथ कुर्बानियां पेश कीं इसने उन्हें अल्लाह के नबी (सल्ल॰) की निगाह में और अल्लाह तबारक व तआला के यहां भी बड़ा सर बुलंदियों का पात्र बना दिया, इनमें से हर एक के दिल में अपने नबी (सल्ल॰) अल्लाह तबारक व तआला और अपने दीने-मतीन की ऐसी मोहब्बत जाग गयी थीं कि वह इस राह में अपना सब कुछ कुर्बान करने को हर वक़्त तैयार रहते थे। यही वजह है कि आप (सल्ल॰) ने भी विभिन्न मौक़ों पर अपने सहाबा की अज़मत को बयान फरमाया और उम्मत को तलक़ीन की कि वह न सिर्फ इनकी ताज़ीम व तकरीम को अपना दीनी व ईमानी फरीज़ा समझे बल्कि इनकी ज़िन्दगी और सीरत व किरदार को अपनाते हुए ज़िन्दगी भी गुज़ारें। आपने एक अवसर पर इर्शाद फरमाया 'मेरे सहाबा को गालियां न देना, उस ज़ात की क़सम जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान हैं अगर तुम में से कोई व्यक्ति ओहद पहाड़ के बराबर भी सोना ख़र्च करे। (अल्लाह के रास्ते में) तो इनमें से किसी एक के खर्च किए हुए मद (मामूली मिक़दार) के बराबर भी नहीं पहुंच सकता (सही-मुस्लिम, किताब अल फज़ाइल)।

इस हदीस पाक से अनुमान लगाया जा सकता है कि इस्लाम में सहाबा कराम की अज़मत कितनी अधिक है और अल्लाह के रास्ते में इनकी दी गयी कुर्बानियों की क़द्र व क़ीमत किस क़दर आला है। इसी तरह एक और हदीस में जो बहुत ही मशहूर हैं और जुमे में ख़ुत्बे के दौरान इमाम साहब उसे पढ़ते हैं, आप (सल्ल॰) ने क़यामत तक के लिए पूरी उम्मत को सावधान करते हुए फरमाया ''मेरे सहाबा के बारे में अल्लाह से डरना, मेरे सहाबा के बारे में अल्लाह से डरना, जिसने इनसे मोहब्बत की, इसने मुझसे मोहब्बत की, और जिसने इनसे बुग़ज़ रखा इसने मुझसे बुग्ज़ रखा और बेहतरीन लोग मेरे ज़माने के लोग हैं फिर जो उनके बाद आने वाले हैं।'' इस हदीस से भी सहाबा कराम की बेपनाह अज़मत का इज़हार होता है कि नबी पाक (सल्ल॰) इन से मोहब्बत को अपनी मोहब्बत की अलामत क़रार दे रहे हैं और इनसे बुग्ज़ को अपनी ज़ात से बुगज़ की अलामत क़रार दे रहे हैं। ❑❑

नूरे क़ुरआन

(सूरा अल फलक़ नं॰ 113)

अनुवाद और व्याख्या : शैख़ुल हिन्द र.अ.

यह सूरा मदीने में उतरी इसमें पांच आयतें हैं।

प्रारंभ करता हूं मैं अल्लाह के नाम से जो असीम कृपालु महादयालु है।

आप की दीजिए कि मैं प्रात:काल के रब की शरण लेता हूं।

अर्थात् जो रात के अंधेरे को फाड़कर प्रात:काल की रोशनी उत्पन्न करता है।

उसकी बनाई हुई हर वस्तु की बुराई से।

अर्थात् हर ऐसी उत्पन्न की हुई वस्तु से जिसमें किसी प्रकार की बुराई हो उसकी बुराई से पनाह मांगता हूं। उसके पश्चात् कुछ विशेष वस्तुओं का वर्णन किया।

और अंधेरी रात की बुराई से। जब वह सिमट आये।

अर्थात् रात का अंधेरा कि उसमें बहुधा बुराईयां विशेषकर जादू वग़ैरह अधिकता से किये जाते हैं या चांद ग्रहण या सूर्य के छुप जाने से तात्पर्य है। हज़रत शाह अब्दुल क़ादिर साहब लिखते हैं कि इसमें सब अंधेरियां आ गयीं प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष की ग़रीबी, परेशानी और गुमराही भी।

और गिरहों (गांठों) पर पढ़-पढ़ फूंकने वाली औरतों की बुराई से।

इस आयत का तात्पर्य वह औरतें या जमातें या उन व्यक्तियों से है जो जादू का काम करते समय ताँत, रस्सी या बाल आदि में कुछ पढ़कर और फूंक मारकर गिरह (गांठ) लगाया करते हैं। हज़रत के ऊपर जो जादू लबीद इब्ने आसम ने किया था, लिखा है कि कुछ लड़कियां भी उसमें शामिल थीं।

रुकू नं॰ 1

और बुरा चाहने वाले की बुराई से। जब टोक लगाने लगे।

हज़रत शाह अब्दुल क़ादिर साहब लिखते हैं कि उस समय उसकी टोक लग जाती है। नि:संदेह टोक या नज़र लग जाना सच है, लेकिन अधिक व्याख्याकारों के विचार में इस आयत का मतलब यह है कि ईष्यालु जब अपने हृदय के भावों को वश में न कर पाये और प्रत्यक्ष रूप में अपनी ईर्ष्या का प्रदर्शन करने लगे तो उसकी बुराई से पनाह मांगनी चाहिये अगर एक व्यक्ति के दिल में बिना इरादा ईर्ष्या उत्पन्न हो गई, मगर वह अपने मन को अधिकार में रखकर महसूद (जिसके साथ ईर्ष्या की गई) के साथ कोई ऐसा व्यवहार न करे, वह इससे अलग है। दूसरे याद रखना चाहिये कि हसद (ईर्ष्या) का अर्थ यह है कि दूसरे से अल्लाह की दी हुई नामत के समाप्त होने की इच्छा करे, लेकिन यह इच्छा करना कि मुझे भी नामत या इससे अधिक मिल जाये, ईर्ष्या में सम्मिलित नहीं उसे गिबता (किसी जैसा बनने की इच्छा) कहते हैं।

(सूरा अल नास नं॰ 114)

यह सूरा मदीने में उतरी इसमें 6 आयतें हैं।

प्रारंभ करता हूं मैं अल्लाह के नाम से जो असीम कृपालु महादयालु है।

आप कह दीजिए कि मैं लोगों के पालनहार लोगों के बादशाह, लोगों के उपास्य की शरण लेता हूं।

यद्यपि अल्लाह के पालनहार और बादशाह होने की शान पूरी दुनिया को घेरे हुये हैं लेकिन इन गुणों का जैसा उत्तम प्रदर्शन इंसानों में हुआ है किसी दूसरे जीवधारी में नहीं हुआ, इसलिए रब और बादशाह आदि के गुण उन्हीं से सम्बन्धित किये गये हैं। दूसरी बात यह भी है कि शैतान के बहकाने और फुसलाने में फंस जाना इंसान के साथ विशेष है किसी और सृष्टि में इंसान की भान्ति नहीं पाया जाता।

फुसलाने वाले छिप जाने वाले की बुराई से।

शैतान नज़रों से ओझल होकर आदमी को बहकाता-फुसलाता है, जब तक आदमी ग़फ़लत में रहा, शैतान का प्रभाव बढ़ता रहा, जहां जाग कर अल्लाह को याद किया, यह तुरंत पीछे को खिसका।

रुकू नं॰ 1

जो लोगों के दिलों में बुरे विचार डालता है चाहे वह जिन हो और चाहे आदमी।

शैतान जिनों में भी है और आदमियों में भी, अल्लाह दोनों से पनाह में रखे।

महिलाओं को 40 फीसद टिकट देकर यूपी में हम नया प्रतिमान गढ़ रहे हैं प्रियंका गाँधी

उत्तर प्रदेश की प्रभारी कांग्रेस महासचिव भी गहराई में तैरना सीख रही हैं लेकिन उन्हें इस हिसाब में ग़लत नहीं ठहराया जा सकता। उत्तर प्रदेश में महिलाओं की आबादी 46 प्रतिशत ज़्यादा है। पर क्या उन्हें महिला की अपनी पहचान को ध्यान में रखकर वोट डालने के लिए मनाया जा सकता है? क्या महिलाएं धर्म, जाति और विचारधारा जैसी बातों को एक ओर रखकर वोट डालेंगी? उत्तर प्रदेश में दो मुख्य प्रतिद्वंदी-भाजपा और सपा जातिगत समीकरणों के आधार पर गठबंधन करने में बिजी हैं। इस बीच कांग्रेस ने यूपी की राजनीति में नारीकरण के रूप में एक नया पहलू जोड़ा है। उत्तर प्रदेश की प्रभारी महासचिव प्रियंका गांधी इसे एक नए विमर्श की नींव कह रही हैं जो 2024 के आम चुनाव का ख़ाका भी तैयार करेगा, पेश प्रियंका गांधी जी के एक इंटरव्यू के मुख्य अंश।

प्रश्नः- कांग्रेस ने इस चुनाव में खुद को 'महिला केन्द्रित' करने का फैसला क्यों किया है? 'लड़क हूं, लड़ सकती हूं' नारे के पीछे क्या है?

उत्तरः- यह महज़ महिला केन्द्रित अभियान बिल्कुल नहीं। हमारे और भी कई आयाम हैं। मसलन युवाओं पर ध्यान, किसानों के लिए न्याय, कमरतोड़ महंगाई के ख़िलाफ़ लड़ाई और तथ्य यह है कि हम एक सकारात्मक और प्रगतिशील चुनाव अभियान चला रहे हैं। हम यूपी के भविष्य के लिए अपनी योजना को पेश करना चाहते हैं, विकास, स्वास्थ्य, शिक्षा महिला अधिकार, किसानों को फायदे और सामाजिक न्याय को बहस के केन्द्र में लाने की कोशिश कर रहे हैं। यह समय जनता से जुड़े और विकास के मुद्दों को बजाए इसके कि विभाजनकारी और ऐसा अभियान चलाया जाए तो नकारात्मतका नफ़रत को बढ़ाए और जिससे कुछ राजनैतिक दलों को ही फायदा होता हो।

प्रश्नः- आपको क्यों लगता है कि लोग जाति और धर्म के आधार पर वोट नहीं करेंगे.?

उत्तरः- अधिकतर लोग जाति और धर्म के आधार पर ही वोट देना जारी रखेंगे। इस सच्चाई से मैं वाक़िफ़ हूं लेकिन कांग्रेस इसे एक नया वर्तमान बनाकर चुनौती देना चाहती है महिलाएं आबादी का करीब 50 प्रतिशत है और इस तरह राज्य में, सच पूछिए तो पूरे देश में सबसे मज़बूत राजनैतिक शक्ति हैं, अगर वे यह जान जाएं कि उनकी सामूहिक क्षमता बदलाव लाने के क़ाबिल है। हमारी पार्टी एक शुरुआत कर रही है, एक नई बहस की नींव रख रही है। हम महिलाओं को बता रहे हैं कि वे भविष्य की संरक्षक है : अपनी शक्ति को पहचानिए, हाथ मिलाइए, अपने अधिकार मांगिए।

प्रश्नः- उन्नाव बलात्कार पीड़िता के परिजन को टिकट देने के पीछे क्या तर्क था? आपके पास सामाजिक कार्यकर्ता हैं, आशा कार्यकर्ता है..पुराने पार्टी नेता इन नए उम्मीदवारों को समर्थन देने को तैयार हैं?

उत्तरः- इन लोगों को चुनने का कारण उन्हें सशक्त बनाना है। बदलाव की असली कुञ्जी राजनैतिक सशक्तिकरण है। उन्नाव के उम्मीदवार की बेटी के बारे में सब जानते है। कि उसका बलात्कार स्थानीय भाजपा विधायक ने किया था, उसके पति को भाजपा सरकार की मिलीभगत से हिरासत में लिया गया और कथित तौर पर पीट पीट कर मार डाला गया, उसका देवर जेल में बंद हैं और उसको पांच मृत परिजनों का अंतिम संस्कार करने के लिए घर आने की अनुमति तक नहीं दी गई। उनकी बेटी के वकील की एक दुर्घटना में मौत हो गई थी, जिसकी साज़िश उसी विधायक ने रची थी, उसकी भाभी और भतीजी की उस दुर्घटना में मृत्यु हो गई थी और बलात्कार पीड़िता को मरने के लिए छोड़ दिया गया होता अगर हमारी पार्टी के नेतृत्व में राज्यव्यापी विरोध नहीं किया जाता। हम उन्हें और उनके माध्यम से बेइंतिहा अन्याय के सभी पीड़ितों से कह रहे हैं कि हम खुद आपके विधायक बनने के लिए आपका समर्थन करेंगे। हम आपके जीवन को नष्ट करने के लिए इस्तेमाल की गई शक्ति आपको पाने में आपकी मदद करेंगे, ताकि कोई भी इसका इस्तेमाल कभी भीा नहीं आप को फिर से रौंदने के लिए न कर सकें। इसी तरह की लड़ाई लड़ने वालों के मामले में हम एक स्पष्ट संदेश भेज रहे हैं - हमारा मानना है कि राजनीति का उद्देश्य जनता की सेवा करना, न्याय के लिए लड़ना और वंचितों को सशक्त बनाना है। हमारी पार्टी के कार्यकर्ता अधिकांश क्षेत्रों में इन उम्मीदवारों का समर्थन कर रहे हैं, जहां भी भावनाएं आहत होती हैं, हम उनका समाधान करने के लिए काम कर रहे हैं।

प्रश्नः- कांग्रेस दूसरे राज्यों में 40 फीसद टिकट का फार्मूला क्यों नहीं अपना रही? मुख्यमंत्री योगी ने भी यह मुद्दा उठाया है

उत्तरः- ऐसी शुरुआत क़दम दर क़दम की जाती है। सभी बड़े बदलावों की तरह इसे भी जड़ जमाने में समय लगेगा। योगी जी और उनकी पार्टी इसलिए ऐसे सवाल नहीं पूछ रहे कि

बाक़ी पेज 11 पर

उ०प्र० : चुनावी दौड़ में कहां है बसपा

करीब पांच वर्ष पूर्व अपनी किताब *बहनजी* के तीसरे और आख़िरी संस्करण मैं मैंने इसके उपशीर्षक 'द पॉलिटिकल बायोग्राफी ऑफ मायावती (मायावती की राजनीति जीवनी) को बदलकर द *राइज एंड फॉल ऑफ मायावती* (मायावती का उत्थान और पतन) कर उनके राजनीतिक सफर के अंत की भविष्यवाणी की थी। वह और उनके सहयोगी इससे नाराज़ हो गए थे, लेकिन उत्तर प्रदेश की राजनीति, के कई जानकारों ने भी महसूस किया कि मैंने एक ऐसी नेता के राजनीतिक सफर के अंत की घोषणा कर जोखिम उठाया है जिन्होंने अतीत में कई बार हार के जबड़ों से जीत छीनी थी। हालांकि, मैं न केवल राज्य और संसदीय चुनावों में उनकी बार-बार की हार, बल्कि पिछले पांच सालों में उत्तर प्रदेश के तेज़ी से बदलते सामाजिक राजनीतिक परिदृश्य को देखते हुए आश्वस्त था कि बहनजी और उनकी पार्टी निर्णायक रूप से गिरावट की ओर है और उनका पुनरुत्थान किसी चमत्कार से कम नहीं होगा।

यह सच है कि 2019 के लोकसभा चुनाव में बसपा सुप्रीमो दस सीटें हासिल करने में सफल रही थीं, पिछले लोकसभा चुनाव के लिहाज़ से यह बड़ी सफलता थी, क्योंकि तब उन्हें एक भी सीट नहीं मिली थी लेकिन यह संभव हुआ था समाजवादी पार्टी के मुस्लिम वोटों के बसपा उम्मीदवारों को हस्तांतरण से। तब हताशा से घिरी मायावती और यादव परिवार के झगड़े की वजह से संकट में घिरे अखिलेश यादव ने हड़बड़ी में गठबंधन किया था। नुकसान तो समाजवादी पार्टी को हुआ था, लेकिन बहनजी ने अचानक गठबंधन तोड़ दिया। कहा जाता है कि उन्होंने कथित तौर पर भाजपा के ताक़तवर गृहमंत्री अमित शाह के दबाव में ऐसा किया।

लोकसभा चुनाव के बाद से मायावती राजनीतिक रूप से उदासीन रहीं हैं। वह बेबसी के साथ देखती रहीं कि कैसे 403 सदस्यों वाली मज़बूत विधानसभा से उनके 19 विधायक में से 13 समाजवादी पार्टी में चले गए। एक समय उनके बेहद करीबी राजनीतिक सहयोगी रहे स्वाम प्रसाद मौर्य, दारा सिंह चौहान और नसीमुद्दीन सिद्दिकी ने तो पहले ही उनका साथ छोड़ दिया था। पिछले कुछ सालों में राज्य की राजनीति में मायावती की आधी अधूरी भागीदारी, यहां तक कि उत्तर प्रदेश में दलितों के उत्पीड़न की घटनाओं पर उनकी चुप्पी से यही महसूस किया जाता है

बाक़ी पेज 11 पर

देश में विफल होता जा रहा है दल-बदल विरोधी क़ानून

संविधान में 52वें संशोधन के बाद लाया गया दल बदल क़ानून (1985) आज पूर्णतः अपने मक़सद में विफल हो चुका है। इस क़ानून को लाने का उद्देश्य राजनीतिक लाभ और पद के लालच में दल- बदल करने वाले जनप्रतिनिधियों को अयोग्य करार देना है। दल बदल कानून एक उचित सुधार था लेकिन इसके उपबंधों ने इस कानून की मारक क्षमता को कम कर दिया है जो दल-बदल पहले एकल होता था अब सामूहिक तौर पर होने लगा है। आज के समय में दल बदलू नेताओं द्वारा चुनाव से पूर्व एवं चुनाव के जीतने के पश्चात् किए गए गठबंधन पूरी तरह से भारतीय वोटरों की उम्मीदों पर पानी फेर रहे है।

ठीक चुनाव से पहले दल-बदल करने वाले नेताओं की फेहरिस्त काफी लंबी है। मौक़ा देख कर एक दल से दूसरे दल में जाने वाले दल-बदलू नेता हमेशा ही देश के लिए संकट खड़ा करते रहे हैं। ऐसे नेता सिर्फ और सिर्फ सत्ता के लोभी होते हैं और इनका मक़सद होता है 'अपना काम बनता भाड़ में जाए जनता'। इतिहास इस बात का गवाह है कि दल-बदलुओं ने अनेक बार चुनावों के नतीजों को प्रभावित किया है और पार्टी व देश को उनके कारण अनेकों बार नुकसान सहना पड़ा है। सत्ता लोभी राजनीतिक पार्टियां भी अपनी जीत के लालच में दल-बदलू नेताओं को टिकट का चारा डालकर अपनी पार्टी में सम्मिलित करके दल-बदल कानून की धज्जियां उड़ा रहे हैं। ऐसे नेताओं का समाज सेवा से कोई लेना देना नहीं होता है उन्हें तो जहां मेवा दिखाई देगा वहीं खिसक लेंगे। इस तरह के नेता अपने निजी व राजनीतिक लाभ के लिए इधर से उधर पार्टी बदलते रहते हैं इसलिए इनके लिए 'आया राम, गया राम' जैसा जुमला प्रयोग किया जाता है।

आपराधिक व बाहुबली पृष्ठभूमि वाले नेता दलबदलुओं में सबसे आगे रहते हैं। अपने ख़िलाफ़ चल रहे आपराधिक मुक़दमों को छुपाने व कार्रवाई से बचने के लिए वे अक्सर सत्ताधारी पार्टी के साथ ही जुड़ना पसंद करते हैं। ऐसे में नागरिक के रूप में हमारा उत्तरदायित्व बनता है कि हम इन दल-बदलू, आपराधिक छवि के सत्ता लोभी नेताओं को अपना समर्थन व वोट न दें।

जैसा कि हम सभी जानते हैं कि 1968 के आम चुनावों में सांसदों व विधायकों के दल बदलने का रिकॉर्ड क़ायम हुआ था। 430 सांसद/विधायकों के दल बदलने के कारण 16 राज्यों की सरकारें गिर गई थी जिसमें हरियाणा के सत्ता लोभी विधायक गयालाल ने 15 दिन के अंदर तीन बार दल बदल करके एक रिकॉर्ड कायम किया था। दल बदलकर 1979 में प्रधानमंत्री बने चौधरी चरण सिंह को इसी कारण तमाम विरोधी लोग आज भी सम्मान की दृष्टि से नहीं देखते हैं। इस दल-बदल ओछी राजनीति को रोकने के लिए भारतीय संसद में 52वाँ संविधान संशोधन एक्स 1985 लागू किया गया जिसके अंतर्गत किसी भी सांसद व विधायक की सदस्यता समाप्त हो जाएगी अगर वह अपनी इच्छा से अपने दल से त्यागपत्र देता है परंतु इसके ढुलमुल उपलबंधों के कारण आज यह क़ानून विफल होता दिखाई दे रहा है। सुप्रीम कोर्ट के समक्ष भी दल बदल से जुड़े काफी मामले आए हैं लेकिन 10वीं अनुसूची के अनुच्छेद 7 के प्रावधानों के कारण सदन के अध्यक्षों के निर्णय पर कोर्ट को पुर्नविचार का अधिकार नहीं है। ज़्यादातर भारतीय संसद व विधानसभाओं में अध्यक्ष व सभापति सत्ताधारी पार्टियों के ही होते हैं जिसके कारण वे अपनी पार्टी को फायदा पहुंचाने के अनुचित निर्णय लेते हैं जिससे दल-बदल क़ानून को सफल बनाने के लिए देशहित व इन सत्ता लोभी नेताओं से छुटकारा पाने के लिए भारतीय संसद व विधानसभा अध्यक्ष पदों पर सामाजिक, उच्च शिक्षाविद एवं प्रतिष्ठित व्यक्तियों को ही निर्वाचित किया जाना चाहिए जो कि किसी भी राजनीतिक दल के सदस्य न हो। ❑❑

'थ्री इन वन' पैकेज हैं केएल राहुल गंभीर

प्रश्नः- कई बार टीमें स्थानीय खिलाड़ियों को लेती हैं, जैसे अहमदाबाद ने हार्दिक पांडया को कप्तान बनाया। क्या यूपी में भी ऐसे कोई खिलाड़ी हैं जिन पर आपकी निगाहें हैं जैसे, सुरेश रैना, कुलदीप यादव?

उत्तरः- (गौतम) सब स्कीम में हैं लेकिन यह नहीं कहा जा सकता कि कौन इसमें होगां। यह इस पर निर्भर करेगा कि कोई भी खिलाड़ी हमारी संरचना में फिट बैठता है या नहीं। उ.प्र. का खिलाड़ी हो तो उससे बेहतर कुछ नहीं हो सकता, लेकिन उससे महत्वपूर्ण चीज़ होगी कि जो हम चाहते हैं और वह उस नंबर पर खेल सकता हो। सिर्फ यूपी पर ही ध्यान केन्द्रित नहीं होगा। संयोजन ज़्यादा महत्वपूर्ण होगा।

प्रश्नः- आप ऐसा क्या करेंगे कि टीम में उ.प्र. की महक मिले? आपके कप्तान भी उ.प्र. के नहीं हैं?

उत्तरः- (संजीव) टीम तो ऐसी चुननी होगी जो विजयी संयोजन दे सके। यूपी के खिलाड़ी फिट होंगे तो हम उन्हें लेने की कोशिश करेंगे। अगर खिलाड़ी में क्षमता नहीं है तो उसे प्रदेश का होने के आधार पर हम नहीं खरीदेंगे। यह यूपी की पहली टीम है और हम कोशिश यही करेंगे कि यहां के लोगों को जोड़ें।

प्रश्नः-उ.प्र. और अहमदाबाद के लिए समान बोली लगाई। अहमदाबाद के ऊपर उ.प्र. को क्यों चुना?

उत्तरः- (संजीव) उ.प्र. की आबादी 26 करोड़ की है जिसको आज एक राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिनिधित्व नहीं मिला है। पहली बार ऐसी चीज़ होगी जिससे देशभर में लखनऊ या उप्र का नाम होगा। मैंने बाराबंकी में एक प्लांट लगाकर अपने कैरियर की शुरुआत की थी। मेरा उ.प्र. से एक अलग किस्म का लगाव है।

प्रश्नः- आईपीएल को बाहर ले जाने की बात चल रही है। क्या आप अपना पहला सत्र इकाना स्टेडियम में नहीं खेलना चाहेंगे..?

उत्तरः- (संजीव) इकाना अच्छा है। कोरोना के चलते शायद यह टूर्नामेंट एक ही आयोजन स्थल में होगा। अभी इसके विदेश में होने की कोई चर्चा नहीं है।

प्रश्नः- आप लोकेश राहुल, रवि बिश्नोई और मार्कस स्टोइनिस को ले चुके हैं। क्या वजह रही?

उत्तरः- (गौतम) अगर कोई खिलाड़ी आपको ओपनिंग, कीपिंग तथा कप्तानी करके देता है तो वह थ्री इन वन पैकेज है। वह राहुल हैं। आप पिछले तीन चार साल के उनके बल्लेबाज़ी रिकॉर्ड को देखिए तो कोई भी फ्रेंचाइजी उन्हें लेती। बिश्नोई युवा लेग स्पिनर हैं। नीलामी में कलाई के स्पिनरों की बहुत मांग रहती है। वह उस समय तक भारतीय टीम में नहीं खेले थे लेकिन वेस्टइंडीज के ख़िलाफ़ उन्हें चुना गया है। हमने 21 साल के ऐसे खिलाड़ी को लिया है जो अच्छा प्रदर्शन करते हैं और लगातार सुधार करते रहे तो अगले 10-20 वर्ष फ्रेंचाइजी के साथ रह सकते हैं। स्टोइनिज एक ऑलराउंडर और फिनिशर हैं। वह जिस तरी की स्ट्राइक रेट देते है वह उस नंबर पर काफी ज़रूरी है। आपको कोई 20 गबेंद में 40-45 रन बनाकर दे और मैच ख़त्म करे तो अच्छा है। बात यह भी है कि ड्राफ्ट में ज़्यादा आलराउंडर थे भी नहीं।

प्रश्नः- लेकिन राहुल की कप्तानी का रिकॉर्ड बहुत अच्छा नहीं रहा है?

उत्तरः- (गौतम) चार मैच में कोई अच्छा और ख़राब नहीं हो जाता। कप्तानी एक ऐसी चीज़ है जिसमें आप हर दिन सीखते हैं। यह कोई ऊपर से लेकर नहीं आता। दुनिया के सबसे बेहतरीन कप्तानों ने भी बहुत मैच हारे हैं। सबका जीत का रिकॉर्ड देंखे तो 55-60 प्रतिशत ही है। राहुल सुधार करेंगे।। कई लोग बहुत जल्दी सफलता प्राप्त करते हैं, कुछ को देर लगती है। राहुल बेहतरीन तरीक़े से काम करेंगे। सबसे ज़्यादा ज़रूरी बात यह है कि वह हालात से थकते नहीं। बाकी हम सभी उनके साथ हैं। हमारे लिए यह ज़रूरी होगा कि हम ऐसा प्लेटफार्म दें जहां वह खुद को खुलकर व्यक्त कर सकें। कप्तान उतना ही अच्छा होता है जितनी अच्छी उसकी टीम होती है।

प्रश्नः- किंग्स इलेवन पंजाब में भी उनका रिकॉर्ड अच्छा नहीं रहा है। आपको नहीं लगता कि कप्तानी से उनकी बल्लेबाज़ी पर दबाव पड़ता है?

उत्तरः- (गौतम) हमें ऐसा माहौल बनाना पड़ेगा कि राहुल खुद को आराम से व्यक्त कर सकें। जब आप फील्डिंग के लिए उतरते हैं तभी आप कप्तान के तौर पर होते

बाक़ी पेज 11 पर

गेंद संग बल्ले से भी कमाल दिखाना चाहते हैं : आवेश

प्रश्नः- आईपीएल में ज़ोरदार प्रदर्शन के बाद दक्षिण अफ्रीका दौरे पर आपके चयन की उम्मीद थी। चयन न होने पर क्या हताशा हुई..?

उत्तरः- चयन मेरे हाथ में नहीं है। इसलिए इस बारे में नहीं सोचता। फिर भी ईमानदारी से कहूं तो थोड़ा बुरा ज़रूर लगा था, क्योंकि आईपीएल के प्रदर्शन के बाद मुझे मौक़ा मिलने की उम्मीद थीं। मगर मैं जल्द ही इससे उबर गया और अपनी तैयारियों में जुट गया।

प्रश्नः- टीम में चयन न होने पर ख़ाली समय का कैसे इस्तेमाल किया..?

उत्तरः- मैं कभी भी ख़ाली नहीं बैठा। अभ्यास जारी रहा। नेट्स पर अभ्यास अलग होता है और मैच की स्थिति अलग होती है इसलिए मैं नियमित क्लब मैच खेलकर अपनी क्षमताओं में सुधार करता रहा। इससे स्वयं का आंकलन भी होता है।

प्रश्नः- क्या कैरेबियाई टीम के ख़िलाफ़ मौक़ा मिलने की उम्मीद थी.?

उत्तरः- उम्मीद तो हमेशा होती है। मैं स्वयं को हमेशा तैयार रखता हूं। तेज़ गेंदबाज़ होने के नाते फिटनेस पर लगातार ध्यान देता हूं। साथ ही गेंदों में सटीकता को लेकर मेरा अभ्यास चलता रहता है।

प्रश्नः- आईपीएल में 24 विकेट लेकर दूसरे सबसे सफल गेंदबाज़ होने के बावजूद आपने आधार मूल्य सिर्फ 20 लाख रुपये रखा। इतना कम क्यों?

उत्तरः- यह सही है कि मुझे बहुत ज़्यादा विकेट मिले। इसके अलावा आइपीएल में सबसे ज़्यादा डाट गेंद (ख़ाली गेंद) मैंने ही फेंकी। मगर मैं अनकैप्ट खिलाड़ी हूं। अनकैप्ड खिलाड़ी के लिए आधार मूल्य 20, 30 और 40 लाख रुपये होता है। इसलिये मैंने 20 लाख रुपये आधार मूल्य तय किया।

बुख़ार के हैं अनेक प्रकार

लगभग दो वर्ष से जब से कोरोना का प्रकोप जारी है उसके मैन लक्षणों में बुख़ार भी है, किसी को बुख़ार होता है तो पहला डर कोरोना का लगता है। पर बुख़ार आना सेहत की सबसे सामान्य समस्याओं में एक हैं यह संकेत है कि हमारे शरीर के साथ कुछ गड़गड़ है। कई कारण हैं, जिनसे शरीर का तापमान सामान्य से अधिक हो जाता है। इन कारणों में थकान से लेकर कैंसर तक शामिल है। सामान्य बुख़ार दो से तीन दिन में ठीक हो जाता है। पर, अगर कई दिनों तक शरीर का तापमान सामान्य से अधिक बना रहता है तो डॉक्टर से ज़रूर मिलना चाहिए।

क्या होता है बुख़ार

विशेषज्ञों के अनुसार 'बुखार के लिए पायरेक्सिया और हाइपरथर्मिया शब्दावली का इस्तेमाल भी किया जाता है। तकनीकी रूप से शरीर का तापमान सामान्य से अधिक होना बुख़ार है। हालांकि अलग-अलग व्यक्तियों के लिए शरीर का सामान्य तापमान अलग अलग हो सकता है, लेकिन 98.6 फेरेनहाइट को सामान्य तापमान कहते हैं। अमेरिका के सेंटर फॉर डिजीज़ कंट्रोल एंड प्रिवेंशन के अनुसार 100.4 डिग्री फेरेनहाइट को बुख़ार माना जाता है।

बुख़ार अपने आप में कोई बीमारी नहीं है, बल्कि इस बात का संकेत है कि शरीर किसी बीमारी या संक्रमण से लड़ने का प्रयास कर रहा है। बुख़ार तब आता है, जब मस्तिष्क का वह क्षेत्र, जिसे हाइपोथैलेसम (इसे शरीर का थर्मोस्टेट भी कहा जाता है) कहते हैं, आपके शरीर के सामान्य तापमान के शिफ्ट पाइंट को ऊपर की ओर शिफ्ट कर देता है।

लक्षण : शरीर का तापमान बढ़ना बुख़ार का सबसे प्रमुख कारण तो है ही, साथ ही कुछ दूसरे लक्षण भी दिखाई दे सकते हैं, जो बुख़ार के कारण पर निर्भर करते हैं। मसलन- सिरदर्द, पसीना, आसना, कंपकंपी और ठंड लगना, मांसपेशियों में दर्द, भूख न लगना, डिहाइड्रेशन, चिड़चिड़ापन, थकान और कमज़ोरी महसूस होना, गले में ख़राश व सूजन, पेट दर्द, भ्रमित होना इत्यादि।

बुख़ार के प्रकार

शरीर का तापमान कई कारणों से बढ़ता है, इसके साथ ही कितना बढ़ता है और इसका पैटर्न क्या है, यह कितनी अवधि तक रहता है आदि कई बातें निर्भर करती है।

इंटरमिटेंट फीवर : इस स्थिति में शरीर का तापमान दिन में 97 डिग्री रहता है लेकिन रात में बढ़ जाता है। इस प्रकार का बुख़ार परजीवियों या बैक्टीरिया के संक्रमण के कारण होता है। मलेरिया और सेप्टीसीमिया इसके प्रमुख उदाहरण हैं।

सडन हाई फीवर : इसे शरीर के तापमान में अचानक तेज़ बढ़ोत्तरी से पहचानते हैं। इसके कारण थकान, शरीर में दर्द होना और सिरदर्द हो सकता है। डेंगू में अचानक तेज़ बुख़ार आता है। कई वायरस के संक्रमण में भी अचानक तेज़ बुख़ार आता है।

कंटीनियस फीवर : यह एक चिकित्सीय स्थिति है, जिसमें शरीर का तापमान पूरे दिन सामान्य से थोड़ा अधिक होता है। पर इसमें एक डिग्री से अधिक का उतार चढ़ाव नहीं आता है। यह सामान्यता बैक्टीरिया संक्रमण के कारण होता हैं निमोनिया, यूटीआई व टाइफायड में ऐसा पैटर्न देखा जाता है।

रूमैटिक फीवर : यह स्ट्रेप्टोकोकल बैक्टीरिया के कारण होता है। आमतौर पर इसमें पहले गले का संक्रमण होता है और बाद में बुख़ार आ जाता है। इसमें जीभ और टॉन्सिल पर सफेद स्पॉट दिखाई देने लगते हैं और सिरदर्द, सूजन आदि लक्षण भी दिखाई देते हैं।

बुख़ार क्यों आता है

सामान्य कारण : थकान, विषाक्त भोजन करना, एलर्जी और तेज़ ठंडा या गर्मी लगना।

संक्रमण : वायरस, बैक्टीरिया व दूसरे परजीवियों के संक्रमण के कारण बुख़ार होता है कानों में संक्रमण के कारण भी बुख़ार आ सकता है। गंभीर स्वास्थ्य समस्याओं से जूझने पर भी शरीर का तापमान बढ़ जाता है। जैसे रूमेटाइड आर्थ्राइटिस, सायनोवियम (जोड़ों की लाइनिंग की सूजन) आदि के कारण भी बुख़ार हो सकता है।

सिलिकोसिस : यह फेफड़ों की बीमारी है, जो सिलिका धूल में लंबे समय तक रहने से होती है। इसमें भी शरीर का तापमान बढ़ जाता हैं हार्मोन असंतुलन जैसे थाइयरॉयड, कैंसर, खून के थक्के बनना या मनेंजाइटिस में भी शरीर का तापमान बढ़ जाता है। कुछ दवाओं के साइड इफेक्ट व टीका लगने के बाद भी शरीर का तापमान बढ़ जाता है।

डॉक्टर से मिलने में देरी न करें

अगर शरीर का तापमान 103 डिग्री फेरेनहाइट (39.4 डिग्री सेल्सियस) या उससे अधिक है और साथ में निम्न लक्षण भी हैं तो डॉक्टर से संपर्क करें :- तीन दिन से अधिक बुखार होना, तेज सिरदर्द, त्वचा पर आसामान्य रैशेज दिखाई देना, तेज़

उत्तराखंड में बीजेपी ने 'दृष्टि पत्र' नहीं, 'दृष्टि दोष पत्र' जारी किया- कांग्रेस ने चुनावी घोषणापत्र पर किया वार

उत्तराखंड चुनाव के लिए कांग्रेस का प्रतिज्ञापत्र जारी होने के ठीक एक हफ़्ते बाद आज बुधवार को भारतीय जनता पार्टी ने दृष्टि पत्र नाम से अपना घोषणापत्र जारी किया। हालांकि इसमें वादे तो बहुत किए गए हैं लेकिन जो असल मुद्दे थे, जिनके लिए देवभूमि की जनता पिछले 5 सालों से सरकार को हर मोर्चे पर घेरती रही है, वो सारे मुद्दे इसमें गायब हैं। कांग्रेस ने भी उत्तराखंड बीजेपी के घोषणापत्र पर वार किया है। कांग्रेस के राष्ट्रीय प्रवक्ता गौरव वल्लभ ने कहा कि यह बीजेपी का 'दृष्टि पत्र' नहीं है, 'दृष्टि दोष पत्र' है। गौरव वल्लभ ने कहा कि बीजेपी ने 2017 के घोषणा पत्र का मुखपृष्ठ बदलकर 2022 में इसे दृष्टि पत्र के नाम से प्रकाशित कर दिया है। बीजेपी के इस दृष्टि पत्र में प्रमुख मुद्दे, जैसे रोजगार, पलायन और महंगाई नदारद हैं, उद्योगों के नाम पर प्रतिदिन सब्सिडी देना युवाओं के साथ मजाक से ज्यादा कुछ नहीं है। गौरव वल्लभ ने यह भी कहा कि बीजेपी बताए कि केंद्र और राज्य में सरकार होते हुए बीजेपी ने अभी तक कितने मेडिकल कॉलेज खोले और स्वास्थ्य, शिक्षा, बेरोजगारी, पर्यटन, महंगाई और पलायन के मुद्दे पर अभी तक क्या काम किया। उन्होंने तीन मुफ़्त गैस सिलेंडर वाली योजना को कांग्रेस की योजना की कॉपी करने की कोशिश करार दिया। कुल मिलाकर कांग्रेस ने बीजेपी के इस दृष्टि पत्र को दृष्टि दोष पत्र कहते हुए नकार दिया।

शेष.... चुनावी दौड़ में....

कि एक समय की मुखर दलित नेता ने या तो अपना प्रभाव खो दिया है या फिर केन्द्र और राजय की सत्ता के आगे समर्पण कर दिया है। एक वयोवृद्ध दलित कार्यकर्ता, जिन्होंने पिछले तीन दशकों में बसपा के लिए प्रचार किया है, बसपा की इस हालत से मायूस होकर कहते हैं, बहनजी हमें हर परिस्थिति से लड़ने के लिए प्रेरित करती थीं, चाहे चुनौती कितनी ही बड़ी क्यों न हो। मगर पिछले कुछ सालों से ऐसा लगता है कि उन्होंने सक्रिय राजनीति में, रुचि खो दी है। वह यहां तक कहते हैं कि भाजपा में शामिल हुए पूर्व बसपा सदस्यों में पिछले छह माह से बेचैनी देखी जा रही थी। उस समय यदि मायावती ने स्वामी प्रसाद मौर्य जैसे नेता को पार्टी में वापस आने के लिए राज़ी कर लिया होता, तो यह संदेश जाता कि वह वाक़ई भाजपा से लड़ना चाहती है। मगर उनके बजाय अखिलेश पूर्व बसपा नेताओं को अपने साथ जोड़ने में सफल हो गए।

मायावती की ज़्यादातर मुश्किलें ज़मीन पर मौजूद राजनीतिक सच्चाईयों से नाता तोड़ने से उपजी है। ऐसा इसलिए है, क्योंकि वह अब ज़मीनी स्तर के दलित कार्यकर्ताओं के संपर्क में नहीं है। बसपा के उत्थान और पतन के लिए एक तथ्य और ज़िम्मेदार है, वह है ब्राह्मणों से मिला समर्थन और उसकी वजह से हुआ नुकसान। तथ्य यह है कि इसकी वजह से बसपा से अन्य पिछड़ी जातियां और ग़ैर जाटव दलित दूर होते गए हैं, जिन्हें कांशीराम ने बहुजन समाज के ज़मीनी कार्यकर्ताओं के रूप में जोड़ा था। उत्तर प्रदेश के विधान सभा चुनाव के ऐन समय मायावती की राजनीतिक चमक कांग्रेस की तरह धुंधली और फीकी पड़ गई है। ऐसा लगता है कि बसपा और कांग्रेस में होड़ इस बात की है कि तीसरे स्थान पर कौन रहेगा, क्योंकि यहां अब योगी आदित्यनाथ को सीधी चुनौती अखिलेश यादव के नेतृत्व वाले गठबंधन से मिलती दिख रही है।❑❑

शेष.... 'थ्री इन वन' पैकेज...

हैं। बल्लेबाज़ी के समय राहुल सिर्फ बल्लेबाज़ होंगे। राहुल ने चेन्नई सुपर किंग्स के ख़िलाफ़ पंजाब किंग्स के लिए जिस तरह से आख़िरी मैच खेला, अगर वह ऐसे ही खेलते हैं तो अच्छा है। यह सहायक स्टाफ पर निर्भर करता है कि उन्हें किस तरह की स्वतंत्रता मिलती है। अगर उन पर दबाव डालने की कोशिश करेंगे और उनको फंस के खेलने के लिए कहेंगे तो राहुल अपना सर्वश्रेष्ठ नहीं दे सकेंगे। सभी को पता है कि सीमित ओवरों के खेल में राहुल कितने ख़तरनाक खिलाड़ी है। कोच की भूमिका सिर्फ अभ्यास कराना नहीं बल्कि खिलाड़ियों को खुलकर खेलने की इजाज़त देना भी है।

प्रश्नः- नई टीम में कप्तान का कितना रोल होगा..?

उत्तरः- (गौतम) बहुत बड़ी भूमिका होगी। कप्तान ही होता है कि जिसे मैदान मैदान पर नेतृत्व करना है। कप्तान को टीम के साथ संतुष्ट होना ज़रूरी है। हमारी कोशिश होगी कि उनको जैसे और जितने खिलाड़ी चाहिए हम उन्हें दे सकें। ऐसा नहीं है कि हम 100 प्रतिशत देने की कोशिश करेंगे जिससे वह सही रहें। कप्तान अगर कंफर्टेबल होगा तो टीम आराम में होगी।

प्रश्नः- क्या आप बेन स्टोक्स को भी टीम में लेना चाहते थे..?

उत्तरः- (गौतम) स्टोक्स नीलामी में ही नहीं तो इस बारे में कुछ भी कहना सही नहीं है। अगर वह होते तो क्या संयोजन होता वो हम सभी देखते, अकेले मैं नहीं देख सकता। संजीव सर ने इनपुट दिए लेकिन इस प्रश्न का उत्तर तब दिया जाता जब स्टोक्स उपलब्ध होते।

प्रश्नः- आपके पास गंभीर है जो कप, आईपीएल की ट्रॉफी और सांसद का चुनाव जीत चुके हैं। इस टीम को उनका फायदा मिलेगा..?

उत्तरः- (संजीव) आई हॉप ऐसा ही हो। गंभीर एक सफल व्यक्ति हैं और हम भाग्यशाली हैं कि हमारे पास उनके जैसा व्यक्ति टीम में है।❑❑

शेष.... तालिबान की रहमदिली...

और नियमों के तहत वो दोबारा अप्लाई करें। शार्लट के लेख पर जवाब देते हुए एमरजेंसी आवेदन विभाग के प्रमुख क्रिस ने बताया कि शार्लट ने 24 जनवरी को ही आवेदन भेजा था। यानि जिस दिन उन्होंने आवेदन भेजा उसी दिन उन्हें जवाब मिल गया। शार्लट ने अपने ब्लॉग में बताया कि 24 जनवरी को जब उनका आवेदन अस्वीकार हो गया तो उन्होंने वकील और अपने एक परिचित राजनेता से बात की जिसने विभाग के मंत्री तक उनकी समस्या पहुंचायी। 26 जनवरी को उनके बेल्जियम नागरिक पार्टनर को ईमेल आया जिसमें उनके वीजा आवेदन के बारे में पूछा गया था।

शार्लट ने जवाब दिया कि उन्होंने भी वीजा और न्यूजीलैंड का वीजा स्वीकार हो गया और अब वो टक्द में मेडिकल इमरजेंसी के तहत आवेदन भेज सकते हैं। शार्लट को यह बात बुरी लगी कि उनका सामान्य आवेदन नियमों के तहत खारिज करने के बाद राजनेता की पैरवी से उनके लिए जुगाड़ किया जा रहा है।

तब उन्होंने आत्मा की आवाज़ सुनकर यह ब्लॉग लिखा जिस पर दुनियाभर में ख़बर चली। अभी तक यह साफ नहीं है कि कानून की बेहद इज्ज़त करने वाली शार्लट ने गर्भवती होने के बाद अपने चैनल अल-जज़ीरा में इस बाबत बात की थी या नहीं। शार्लट के अनुसार बेल्जियम में कानूनन करीब 15 मार्च तक रुक सकती थीं और उसके आगे रुकने के लिए उन्होंने या उनके बेल्यिजम नागरिक पार्टनर प्रशासन से कोई दरख्वास्त की थी या नहीं। यह भी साफ नहीं है कि उन्होंने बेल्जियम में रहकर आवेदन भेजने के बजाय काबुल लौटकर 12 दिन बाद आवेदन भेजने का क्यों फैसला किया। शार्लट के टवीट से साफ है कि उन्हें कोविड यात्रा नियमों के 15 दिन के विण्डो के बारे में पता था फिर भी उन्हों ने काबुल से 27 फरवरी की फ्लाइट बुक कराकर आवेदन भेजा। मेडिकल इमरजेंसी मामले में उन देशों में मौजूद किवी नागरिकों को 15 दिन विण्डों में छूट देने का प्रावधान है जिनसे महीने में केवल एक हवाई जहाज न्यूजीलैंड जाता हो। अपने आवेदन में शार्लट ने इस विशेष प्रावधान के तहत छूट मांगी है लेकिन अपने समर्थन में अस्पष्ट कारण दिए हैं कि यहां से जाने वाली फ्लाइट कभी भी कैंसल हो सकती हैं यानि यह साफ नही किया है कि एक माह में एक फ्लाइट की शर्त के तहत उन्हें छूट मिलनी चाहिए।

अपने उस पत्र में शार्लट ने तालिबान द्वारा तख़्लापलट को सत्ता का हस्तांतरण कहा हैं अपने ब्लॉग में शार्लट ने तर्क दिया है कि क्योंकि उनके पास अफग़ानिस्तान का वीजा था इसलिए वो वहां वापस लौटीं। हालांकि न्यूजीलैंड के नागरिकों के पास दुनिया के 170 से ज़्यादा देशों में बिना वीजा या वीजा ऑन अराइवल (पहुंच कर वीजा लेने) की सुविधा है तो क्या उन्होंने किसी और देश जैसे ऑस्ट्रेलिया इत्यादि जाने के विकल्प पर सोचा था? शार्लट ने ब्लॉग में लिखा है कि अफग़ानिस्तान में बच्चा पैदा करने मौत की सज़ा जैसा होगा। फिर भी वो बेल्जियम से अफग़ानिस्तान ही लौटीं।

शेष.... महिलाओं को 40 फीसद टिकट....

उन्हें महिला सशक्तिकरण की परवाह हैं, बल्कि इसलिए क्योंकि महिलाओं को लेकर क़दम उठाने से डरते हैं। वे समझते हैं कि अगर महिलाएं उठ खड़ी हुईं और अपने अधिकारों और शक्तियों से परिचित हो गईं, तो वे भारत की राजनीति की दिशा बदल देंगी। इसलिए उन्होंने किया कुछ नहीं, बस जब से हमने यह अभियान शुरू किया है तभी से छटपटाकर महिलाओं पर हमले कर रहे हैं। पहले महिलाओं के मैराथन पर, फिर हमारे महिला घोषणापत्र पर और अब महिला नेताओं और उम्मीदवारों पर.वे एक संकीर्ण नज़रिए वाले स्त्री विरोधी हैं, जो अपनी सोची समझी कल्पना में, महिलाओं को बराबरी में स्वीकार नहीं कर सकते। महिलाओं को सशक्त बनाने का भाजपा का विचार उन्हें साल में एक मुफ्त गैस सिलेंडर सौंपना भर है। हम उस विचार को चुनौती दे रहे हैं। जब महिलाओं के मुद्दों की बात आती है, तो भाजपा का अनुमान लगाया जा सकता है इनकी सोच कैसी है।

प्रश्नः- इतने वरिष्ठ नेता पार्टी क्यों छोड़ गए? उनका आरोप है कि 'प्रदेश कांग्रेस के नए पदाधिकारी' उनकी बात नहीं सुन रहे थे और नए प्रदेश कांग्रेस पदाधिकारी उन्हीं की क्यों सुनें?

उत्तरः- पार्टी संगठन के पुनर्गठन का पूरा मक़सद इसको ज़मीनी स्तर पर जवाबदेह बनाने का है। सांगठिनक ढांचे और यूपी में पार्टी नीतियों की दिशा के लिए पार्टी कार्यकर्ताओं और व्यापक स्थानीय नेतृत्व की आवाज़ सुना जाना ज़रूरी है। 30 वर्ष में पहली बार हमारे पास एक संगठन है जो न्याय और ग्राम पंचायत स्तर तक पहुंच रहा है। हमारे करीब एक लाख कार्यकर्ता हैं जिन्होंने वैचारिक और व्यावहारिक कार्यशालाओं में हिस्सा लिया, हमारे पास कैडर है जो बड़ी रैलियों के लोग जुटा सकता है और सबसे अहम है कि हम लगातार दो वर्ष से जनता के मुद्दे उठाते जा रहे हैं। असल में, उनमें से 18,700 से ज़्यादा लोगों को पिछले डेढ़ वर्ष में भाजपा सरकार ने जेल भेज दिया था। अब यह वैसा संगठन नहीं रहा जहां मुझ समेत कोई भी चमचे लेकर आएगा और कोई पद पा जाएगा। अब यह खुद को प्रतिभा के आधार पर फिर से खड़ा कर रहा है। जाने वाले अलग अलग लोग अलग अलग कारणों से गए हैं मैं उनके बारे में नहीं बोल सकती। जब वे पार्टी में थे, तो उनकी राय और इच्छाओं को महत्व दिया जाता था। उन्हें पदों पर काबिज़ होने का भी मौक़ा मिला तो हमारी पार्टी में कई अन्य ईमानदार और समान रूप से मेहनती लोगों को नहीं मिल पाया क्योंकि उनके पास उस स्तर की पहुंच और अवसर की कमी थी। शायद यह सब उनके लिए काफी न था।

प्रश्नः- इस बार कोई चुनाव पूर्व गठबंधन क्यों नहीं हुआ? क्या आप 2024 पर ध्यान केन्द्रित कर रही हैं?

उत्तरः- हम बहुत मेहनत कर रहे हैं और मज़बूत अभियान के तहत जनता के मुद्दों को उठा रहे हैं। मैं इस चुनाव को पूरे जोर शोर से लड़ रहे हैं। मैं इस या उस चुनाव में यकीन नहीं करती। 2022 के बाद 2024 आता ही है। संगठनात्मक हो या चुनावी, अब हम जो काम कर रहे हैं वह 2024 के लिए भी एक मज़बूत आधार मुहैया करेगा। गठबंधनों के प्रश्न पर मैंने कहा है कि कांग्रेस दूसरे दलों के साथ काम करने को तैयार है। अखिलेश जी इस बात से वाक़िफ़ हैं। मैं मायावती जी के पास भी पहुंची और उनसे कई बार बात की। बहरहाल, हम अपने दम पर लड़कर खुश हैं क्योंकि इससे हमें पार्टी को खुद को फिर से गढ़ने का मौक़ा मिलेगा।

प्रश्नः- आप उत्तर प्रदेश से कितनी सीटों की अपेक्षा रख रही हैं? और पंजाब, गोवा, मणिपुर और उत्तराखंड को लेकर आपका क्या अनुमान है.?

उत्तरः- देखिए, मैं कोई नजूमी नहीं हूं इसलिए भविष्यवाणियों करने में यकीन नहीं रखती। हम ठोस अभियान चला रहे हैं, हर राज्य में सही मुद्दों के लिए आवाज़ उठा रहे हैं। उम्मीद है कि लोग इस पर सकारात्मक ढंग से प्रतिक्रिया देंगे।❑❑

शेष.... बुख़ार के हैं अनेक प्रकार

प्रकाश के प्रति असामान्य संवेदनशीलता, जी मिचलाना और उल्टी होना, सांस लेने में परेशानी, बेचैनी बढ़ना, दौरे पड़ना।

बचाव के उपाय

गंभीर स्वास्थ्य को छोड़ दें तो अधिकतर बुख़ार संक्रमण के कारण होते हैं। संक्रमण से बचने के लिए आप ये क़दम उठा सकते हैं :-

जब भी ज़रूरी हो, अपने हाथों को साबुन-पानी से धोएं या सैनेटाइजर से साफ करें। पानी और तरल पदार्थ अधिक मात्रा में लें।

उबला हुआ और फिल्टर किया हुआ पानी पिएं।

घर का बना ताज़ा व संतुलित भोजन करें।

घर व आफिस में वेंटिलेशन का ध्यान रखें।

अपनी आंखों, नाक या मुंह को छूने से बचें, क्योंकि बैक्टीरिया यहीं से प्रवेश करते हैं।

छींकते या खांसते समय मुंह व नाक ढंके, बीमार लोगों के संपर्क में आने से बचे, बीमार व्यक्ति के निजी समानों को अलग रखें।❑❑

SHANTI MISSION (HINDI WEEKLY) NEW DELHI Postal Registration No. DL(C)-01/1266/2021-23
Publishing Date : **06 Fab.2022** Posting Days : **MON. - TUE.** at **N.D.P.S.O.** New Delhi-110002 R.N.I. 57270/93

•आरक्षण के आंकड़े ज़रूरी •भ्रष्टाचार के विरुद्ध •महामारी और पढ़ाई

आरक्षण के आंकड़े ज़रूरी

देश की सर्वोच्च अदालत ने पदोन्नति में आरक्षण के लिए तय मानदंडों में किसी तरह की रियायत देने से मना करते हुए साफ संदेश दे दिया है। न्यायमूर्ति एल. नागेश्वर राव, न्यायमूर्ति संजीव खन्ना और न्यायमूर्ति बी. आर. गवई की पीठ ने पिछले एक फैसले में यह साफ कर दिया कि सरकारें पदोन्नति में आरक्षण देते हुए मनमानी नहीं कर सकतीं। सर्वोच्च न्यायालय की पीठ ने फैसला सुनाते हुए कहा कि एम. नागरराज (2006) और जरनैल सिंह (2018) मामलों में अदालत ने जो व्यवस्था दी थी, उसी पर वह अभी भी क़ायम है। पदोन्नति में आरक्षण देने के लिए राज्य सरकारों को दरअसल तथ्य और आंकड़ों के साथ काम करना चाहिए, पर सरकारें ऐसा नहीं कर रही हैं। ऐसा संभव नहीं हो पा रहा है। सर्वोच्च न्यायालय के अनुसार, राज्य मात्रात्मक डाटा जुटाने के लिए बाध्य हैं। मोटे तौर पर आरक्षण के आंकड़े बताने से काम नहीं चलेगा, प्रत्येक पद या श्रेणी के हिसाब से अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के आरक्षण को देखना होगा।

अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के लिए किसी भी सेवा या वर्ग में अपर्याप्त प्रतिनिधित्व की समीक्षा लंबे समय से वांछित रही है। हरेक श्रेणी के पदों में यह देखना ज़रूरी है कि किस जाति या जनजाति को न्यायपूर्ण प्रतिनिधि नहीं मिल रहा है। जिस जाति को प्रतिनिधित्व नहीं मिल रहा है, उसके बारे में सर्वोच्च अदालत का रुख़ भी स्पष्ट है। देश का मानस और विधान भी इसी पक्ष में है कि वंचितों को आरक्षण और पदोन्नति में भी आरक्षण मिलना चाहिए।

एक तरह से पीठ ने एक बार फिर स्पष्ट कर दिया है कि केन्द्र सरकार को अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के पदों के प्रतिशत का पता लगाने के बाद आरक्षण नीति पर फिर से विचार करने के लिए समय-सीमा तय करनी चाहिए।

इसमें कोई शक़ नहीं कि अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के लिए किसी भी सेवा या वर्ग में अपर्याप्त प्रतिनिधित्व की समीक्षा लंबे समय से वांछित रही है। हरेक श्रेणी के पदों में यह देखना ज़रूरी है कि किस जाति या जनजाति को न्यायपूर्ण प्रतिनिधि नहीं मिल रहा है। जिस जाति को प्रतिनिधित्व नहीं मिल रहा है, उसके बारे में सर्वोच्च अदालत का रुख़ भी स्पष्ट है। देश का मानस और विधान भी इसी पक्ष में है कि वंचितों को न केवल आरक्षण, बल्कि पदोन्नति में भी आरक्षण मिलना चाहिए। इसमें कुछ गलत नहीं है। यह बहुत ही अच्छी बात है कि सर्वोच्च ने अपनी ओर से कोई सीमा तय नहीं की है और हर जगह के लिए एक जैसी सीमा तय नहीं की है और हर जगह के लिए एक जैसी सीमा या पैमाना तय करना अनुचित भी है। हरेक राज्य में पिछड़ेपन या पिछड़ों की स्थिति में फर्क है और इस फर्क को देखना सरकारों का काम है। इस फर्क के अनुरूप ही यह देखना है कि कोई भी जाति या जनजाति अवसर से वंचित न रहे। देश के लिए यह समझना भी ज़रूरी है कि किन-किन जातियों को किन नौकरियों या पदोन्नतियों में सर्वाधिक लाभ मिला है।

यह भी स्वागतयोग्य है कि सर्वोच्च न्यायालय ने समीक्षा या आंकड़े जुटाने के लिए किसी समय सीमा का निर्धारण नहीं किया है, लेकिन सरकारों को इस काम में पूरी मुस्तैदी से जुट जाना चाहिए। आरक्षण का न्यायपूर्ण होना और दिखना, दोनों ज़रूरी है। क्रीमी लेयर को देखना भी कहीं न कहीं ज़रूरी होती जा रहा है। अफसोस! सरकारें अभी क्रीमी लेयर को छेड़ना नहीं चाहतीं और आरक्षण के ज़रिये समाज में समता पैदा करने की बजाय आरक्षण की राजनीति पर ज़्यादा ज़ोर है। देश की आज़ादी के 75 वर्ष बाद भी वंचित समुदायों को अगड़े वर्गों के समान प्रतिभा के स्तर पर अगर नहीं लाया जा सका है, तो यह सरकारों के स्तर पर बड़ी कमी है। अब समय आ गया है कि आरक्षण और पदोन्नति में आरक्षण के मुद्दे को सियासी नज़रिये से नहीं, बल्कि ज़रूरत के नज़रिये से देखते हुए सामाजिक न्याय सुनिश्चित किया जाए।

भ्रष्टाचार के विरुद्ध

प्रधानमंत्री ने देश में पल बढ़ रहे सबसे बड़े रोग भ्रष्टाचार को लेकर चिंता ज़ाहिर की है और फिर से देशवासियों का ध्यान इस ओर आकर्षित किया है। मगर सच यह है कि इस समस्या से देश लंबे समय से पीड़ित है और इसका ख़ामियाज़ा आखिरकार जनता को उठाना पड़ा है। स्वाभाविक ही इसका सीधा असर देश के विकास पर पड़ा, जिसके आईने में हम पिछले सात दशक से ज़्यादा के आज़ादी के सफर को आंकते हैं। प्रश्न है कि आखिर कौन सी वजहें रहीं के सफर को आंकते हैं। प्रश्न है कि आख़िर कौन सी वजहें रही कि तमाम जद्दोजहद के बावजूद लंबे समय से यह समस्या न केवल ज्यों की त्यों बनी हैं, बल्कि कई स्तरों पर पहले के मुक़ाबले जटिल भी हुई है। क्या सरकार से लेकर आम लोगों के भीतर भ्रष्टाचार की समस्या से निपटने की इच्छाशक्ति में कमी रही या दायित्वबोध का अभाव रहा, जिसके चलते आज भी इस पर फिक्र जतानी पड़ती है? प्रधानमंत्री ने भी यह कहा कि भ्रष्टाचार दीमक की तरह देश को खोखला करता है और ऐसे में हमें अपने कर्तव्यों को प्राथमिकता देते हुए मिल कर इससे शीघ्र मुक्ति पानी हैं इसके लिए आने वाले दशकों तक या अनिश्चितकाल तक इंतज़ार करने की ज़रूरत नहीं है।

एक मुश्किल यह है कि देश में ऐसे ऐसे तमाम लोग हैं, जो भ्रष्टाचार को एक गंभीर समस्या मानते हैं, उसके पीड़ित भी हैं, लेकिन लंबे समय से इसका सामना करने की वजह से शायद वे इसके अभ्यस्त हो गए हैं और इसीलिए इसके प्रति उदासीन दिखते हैं हालांकि देश की ज़्यादातर आबादी इस पर लगाम लगाने के लिए ठोस क़दम की अपेक्षा करती हैं। इसके समांतर आज की युवा पीढ़ी न केवल समूचे तंत्र में गहरे पैठे भ्रष्टाचार को बाकी समस्याओं की जड़ मानती हैं, बल्कि समय पर उचित प्रतिक्रिया भी देती है। चाहे इस पर राय ज़ाहिर करना हो, किसी रूप में भ्रष्ट व्यवहार के ख़िलाफ़ जूझना हो या फिर इसके अंत के लिए आंदोलनों में हिस्सा लेना हो। शायद यही वजह है कि प्रधानमंत्री ने युवाओं से भी उम्मीद ज़ाहिर की है। उन्होंने कहा कि भ्रष्टाचार को ख़त्म करने का काम हम सभी देशवासियों को, आज की युवा पीढ़ी को मिल कर करना है। इसके लिए बहुत ज़रूरी है कि हम अपने कर्तव्यों को प्राथमिकता दें।

महामारी और पढ़ाई

हमने सामान्य हालात की ओर एक क़दम और बढ़ा दिया है। देश के बहुत से प्रदेशों में स्कूल कॉलेज खुल गए, उनके परिसरों में पुरानी रौनक़ लौट आई। कंधों पर बस्ते लादे स्कूल जाते छोटे छोटे बच्चों को देखना हमेशा ही सुखद होता है। कई राज्यों यह दृश्य दिखाई देना शुरू हो गया है और कुछ राज्यों में आने वाले समय में दिखाई देगा यह दृश्य। यह अच्छी बात है कि देश के तकरीबन सभी राज्य एक साथ महामारी के दौर में शिक्षा व्यवस्था को सामान्य बनाने में जुट गए हैं। इस समय जब नए संक्रमितों की दैनिक संख्या और संक्रमण की दर, दोनों नीचे आ रहे हैं, तब इस तरह का फैसला स्वाभाविक ही था।

महामारी के ख़तरों को देखते हुए स्कूलों को खोला जाए या नहीं, इसे लेकर पिछले दो साल में पूरी दुनिया में ख़ासी माथा-पच्ची हुई हैं अमेरिका वगैरह में तो महामारी की पहली लहर के बाद ही स्कूल खोलने की कोशिशें शुरू हो गई थीं। लेकिन तब परिणाम अच्छे नहीं रहे थे। तभी यह ख़तरा भी समझ में आया था कि कोरोना वायरस भले बच्चों को शिकार नहीं बनाता, लेकिन कुछ बच्चे अगर इस वायरस को लेकर घर पहुचते हैं तो वयस्कों और बुज़ुर्गों को इससे ख़तरा हो सकता है। इस दो वर्ष में पूरी दुनिया ने स्कूलों के गेट बंद कर ऑनलाइन शिक्षा की संभावनाएं और सीमाएं भी समझ ली हैं। यह भी समझ में आ गया है कि इस माध्यम से बच्चों को शिक्षित तो किया जा सकता है, लेकिन उनका पूरा मानसिक विकास नहीं हो सकता। ऑनलाइन शिक्षा संगी-साथियों का विकल्प नहीं दे सकती। स्कूलों में जब बच्चे एक दूसरे से मिलते हैं, तो वे सामाजिक संबंधों का ककहरा भी सीखते हैं। इस समय जब बड़ी संख्या में लोगों का वैक्सीनेशन हो चुका है और देश की सभी गतिविधियां सामान्य रूप से चलाई जाने लगी है, बाजार खुल गए हैं और यहां तक कि चुनाव भी पूरे साज धज्जा और धूम धड़ाके साथ हो रहे हैं तब यह अच्छी तरह समझ में आ चुका है कि पूर्ण बंदी से नुकसान भले हो जाए, कोई बहुत बड़ा फायदा नहीं मिलता। ऐसे में, सिर्फ शिक्षण संस्थानों को बंद रखने का कोई अर्थ नहीं रह गया है। ❑❑

महामारी के ख़तरों को देखते हुए स्कूलों को खोला जाए या नहीं, इसे लेकर पिछले दो साल में पूरी दुनिया में ख़ासी माथा-पच्ची हुई हैं अमेरिका वगैरह में तो महामारी की पहली लहर के बाद ही स्कूल खोलने की कोशिशें शुरू हो गई थीं। तभी यह ख़तरा भी समझ में आया था कि कोरोना वायरस भले बच्चों को शिकार नहीं बनाता, लेकिन कुछ बच्चे अगर इस वायरस को लेकर घर पहुचते हैं तो वयस्कों और बुज़ुर्गों को इससे ख़तरा हो सकता है।

ज़रूरी ऐलान

आपकी ख़रीदारी अवधि पते की चिट पर अंकित है। अवधि की समाप्ति से पूर्व रक़म भेजने की कृपा करें।

रक़म भेजने के तरीक़े:-

❶ मनीआर्डर द्वारा ❷ Paytm या PhonePe द्वारा 9811198820 पर SHANTI MISSION

❸ ऑनलाइन हेतु बैंक खाते का विवरण
SBI A/c 10310541455
Branch: Indraprastha Estate
IFS Code: SBIN0001187

ख़रीदारी चन्दा

वार्षिक	Rs.130/-
6 महीने के लिए	Rs.70/-
एक प्रति	Rs.3/-

जानकारी के लिये सम्पर्क करें
साप्ताहिक
शांति मिशन
1, बहादुरशाह ज़फर मार्ग, नई दिल्ली-110002
फोन : 011-23311455

अपने प्रिय अख़बार साप्ताहिक शांति मिशन को इंटरनेट पर देखने के लिये लॉगऑन करें:
www.aljamiat.in ——— www.jahazimedia.com
Mob. 9811198820 — E-mail: Shantimissionweekly@gmail.com

जमीअत ट्रस्ट सोसायटी की तरफ से मुद्रक, प्रकाशक शकील अहमद सैयद ने शेरवानी आर्ट प्रिंटर्स, 1480, क़ासिमजान स्ट्रीट, बल्लीमारान, दिल्ली-6 से छपवाकर मदनी हाल, न. 1, बहादुर शाह ज़फ़र मार्ग, नई दिल्ली-110002 से प्रकाशित किया। संपादक:- मोहम्मद सालिम, फोन:- 23311455, 23317729, फैक्स:- 23316173